Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

दुगुणं करेइ से पावं,
पूयणकामो विसण्णेसी।

जो पूजा का इच्छुक और असंयम का आकांक्षी होता है, वह दूना पाप करता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 8 • 28 नवंबर - 4 दिसंबर, 2022 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 26-11-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

छोटी खाटूवासी हुए निहाल - उपहार में मिला-२०२६ का मर्यादा महोत्सव

श्रमण धर्म के सम्यग् पालन से होता है इहलोक और परलोक हित : आचार्यश्री महाश्रमण

छोटी खाटू, १८ नवंबर, २०२२

छोटी खाटू प्रवास का दूसरा दिन। जिन शासन के उज्ज्वल नक्षत्र आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि श्रमण धर्म बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। श्रमण धर्म का पालन करने वाला धृति संपन्न हो। कामों का निवारण करने का प्रयास करने वाला हो। संकल्पों के वशीभूत न हों। ऐसा योग्य व्यक्ति ही श्रमण धर्म का अच्छा पालन कर सकता है।

श्रमण धर्म पालने वालों में भी तारतम्य हो सकता है। कोई पूनम के, कोई दशमी के, कोई दूज के चाँद के समान हो। पर श्रमण स्तवनीय, नमनीय, नमस्करण्य और प्रणम्य होता है। शास्त्रकार ने कहा है कि श्रमण धर्म का सम्यग् पालन करने से ईहलोक और परलोक हित भी होता है। मृत्यु के पश्चात सुगति की प्राप्ति होती है।

श्रमण धर्म के पालन के लिए बहुश्रुत की उपासना करें। त्यागी साधु से ज्ञान मिलता है, तो जीवन में अच्छी दिशा और दशा की प्राप्ति हो सकती है। हमें आचार्य की वाणी सुनने से दिशा-निर्देशन मिल सकता है। ज्ञानी संत के प्रवचन से ज्ञान प्राप्त हो सकता है। उनके वार्तालाप से तत्त्वज्ञान मिल सकता है, यह एक प्रसंग से समझाया।

जो संत त्यागी है, बड़ा भागी है, उनकी पर्युपासना से बड़ा लाभ मिल सकता है। गुरु के तो पास बैठना अपने आपमें लाभदायी हो सकता है। प्रवचन सुनते-सुनते बहुत कुछ सीख सकता है। बहुश्रुत से प्रश्न करने से बात का स्पष्टीकरण हो सकता है। हमें बहुश्रुत से लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए।

सन् २०२६ का मर्यादा महोत्सव पूज्यप्रवर ने छोटी खाटू में घोषणा करवाई। छोटी खाटू की मुमुक्षु खुशबू की साध्वी दीक्षा भी पूज्यप्रवर ने सिरियारी में ८ दिसंबर को देने की घोषणा करवाई।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में छोटी खाटू में चातुर्मास करने वाली साध्वी ललितप्रभा जी डेगाना चातुर्मास कर पधारी साध्वी संपूर्णयशा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने दोनों सिंघाड़ों को आशीर्वचन फरमाया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि वह क्षेत्र धन्य हो जाता है, जिस क्षेत्र के वासी-प्रवासी उसी क्षेत्र में हैं और उसी क्षेत्र में पूज्यप्रवर ने मर्यादा महोत्सव फरमाए, इससे अधिक प्रसन्नता की और क्या बात हो सकती है। पूज्यप्रवर नए-नए कार्य कर लोगों में प्राणों की शक्ति का संजीवन रस बरसाते हैं। आचार्यप्रवर ने खाटूवासियों को जगा दिया।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि आचार्यप्रवर ने छोटी खाटू पर कृपा करवाई है। छोटी खाटूवासी पूज्यप्रवर को मुमुक्षु के रूप में और आध्यात्मिक भेंट देने का प्रयास करें। स्वाध्याय के महत्त्व को समझाया। गुरु हमारी जिज्ञासा का समाधान करने वाले होते हैं।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि परमपूज्य गुरुदेव एक वरदानी पुरुष हैं। वे ऐसे वरदान प्रदान करवाते हैं कि सामने वाली जनता अपने हर्ष को भी प्रकट नहीं कर पाती है। छोटी खाटूवासी तो एक संघीय कार्यक्रम की माँग कर रहे थे और परम पावन ने एक मर्यादा महोत्सव जैसा गरिमामय आयोजन छोटी खाटू को बख्साया है। छोटी खाटूवासियों का उत्साह बढ़ता रहे।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में छोटी खाटू की बोधार्थी दिव्या, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा नीलम सेठिया, युवक रत्न प्रफुल्ल बेताला, व्यवस्था समिति अध्यक्ष बाबूलाल धारीवाल, सभाध्यक्ष ताराचंद धारीवाल, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी, जैविभा कोषाध्यक्ष विमलचंद भंडारी, प्रेमसिंह चौधरी, रणवीर सिंह, बीजेपी से जीतेंद्र जोधा, एडीएम भुराराम चौधरी, महासभाध्यक्ष मनसुख सेठिया ने अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त कीं। तेयुप ने समूह गीत प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कृत कर्मों को भोगना ही पड़ता है : आचार्यश्री महाश्रमण

डेगाना, २१ नवंबर, २०२२

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः चांदरुण से विहार कर डेगाना पधारे। परमपूज्य ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने एक सिद्धांत बताया है—अपने किए कर्म होते हैं, उन्हें काटे बिना, भोगे बिना मोक्ष नहीं मिल सकता है। जैसी करणी-वैसी भरणी। यह कर्मवाद का सिद्धांत है।

कर्म का फल कैसे भोगना पड़ता है, यह एक प्रसंग से समझाया कि खुद ने गलत प्रयास किया और फल भी भोगना पड़ा। मनुष्य को चाहिए कि वह बुरे कार्य न करे। दूसरों का अहित करने वाला खुद का अहित करने का ही प्रयास करता है। दूसरे का अनिष्ट हो या न हो, पर खुद का अनिष्ठ हो जाता है। यह भी एक बड़े प्रसंग से समझाया कि झूठ बोलने वाले की नाक कटती है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 नवंबर - 4 दिसंबर, 2022

✦ *मन में साधु बनने की भावना भाते रहना चाहिए। भावना का परिणाम भी अच्छा आ सकता है। कोई महान भाग्योदय होता है, तब ऐसी साधना का जीवन प्राप्त होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

साधु-संतों की संगत होती है कल्याणकारी : आचार्यश्री महाश्रमण

रताऊ, १५ नवंबर, २०२२

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः लगभग १५ कि०मी० का विहार कर रताऊ के कृष्णा महाविद्यालय पधारे। परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि सत्संगत का महत्त्वपूर्ण स्थान है। साधुओं की संगति कल्याणकारी बन सकती है। थोड़ी देर की सत्संगति भी अच्छी हो सकती है। साधुओं के दर्शन तो अपने आपमें पुण्य हैं।

साधु जंगम तीर्थ होते हैं, उसका फल मिलता है। हरिकथा और संत समागम दुर्लभ है। अच्छे लोगों की संगति से अच्छे संस्कार मिलने की संभावना रहती है। बुरा देखो मत, बुरा सुनो मत, बुरा बोलो मत, और बुरा तो सोचो भी मत।

ज्ञान से विज्ञान, हेय-गेय का बोध प्रत्याख्यान हो जाते हैं। प्रत्याख्यान करने से संयम, संवर, तपस्या और निर्जरा होती है। करते-करते चौदहवाँ गुण-स्थान आ जाएगा, अक्रिया हो जाएगी और सिद्धि-मोक्ष तैयार है। इस तरह से साधु की पर्युपासना करने से दस लाभ बताए गए हैं। श्रवण, ज्ञान, विज्ञान, प्रत्याख्यान, संयम, संवर, तपस्या, अव्यवधान, अक्रिया और सिद्धि।

'सत्संगत से सुख मिलता है' गीत का सुमधुर संगान पूज्यप्रवर ने करवाया। इसको एक कथानक से भी समझाया कि संगति से दोष आ जाते हैं। विद्यालय में विद्यार्थी को ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार भी मिले। सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति के संस्कार उनके दिमाग में शिक्षक डालते रहें। संस्कारयुक्त शिक्षा हो। रताऊवासियों को अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्पों को समझाकर स्वीकार करवाया।

देशनोक का चातुर्मास संपन्न कर मुनि आकाश कुमार जी, मुनि हितेश कुमार जी ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। दोनों ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। वहाँ के श्रावक हनुमान सिपानी ने भी पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि देशनोक में पहले साध्वी हुलासां जी का लंबा प्रवास हुआ। उनके बाद हम भी वहाँ गए थे। मुनि आकाश और मुनि हितेंद्र का समूह बनाकर देशनोक चातुर्मास हेतु भेजा था। मुनि हितेंद्र के तो २५०० एकासन हो गए। श्रमपूर्ण चातुर्मास करके आए हैं। खूब विकास होता रहे।

कृष्णा महाविद्यालय के प्रधान कृष्ण गोपाल, गाँव के प्रधान हनुमान कासणिया, सरपंच हुकमसिंह ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। विद्यालय के संरक्षक नानुराम ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन किए।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि रताऊ में आज धर्म गंगा आई है। आप धर्म लाभ लें।

जीवन में ईमानदारी को दें प्राथमिकता : आचार्यश्री महाश्रमण

छोटी खाटू, १७ नवंबर, २०२२

तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज बांठड़ी गाँव से १५ किलोमीटर विहार कर श्रद्धा के क्षेत्र छोटी खाटू पधारे। धर्मोपदेशक ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में ईमानदारी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आदमी व्यवहार व लेन-देन करता है। गृहस्थ के सारे उपक्रम में ईमानदारी घनीभूत रहती है, तो वह सारा उपक्रम, व्यवहार दृढ़तया एक अपेक्षा से नैतिकतामय हो जाता है।

गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन शुरू कर अनेक प्रलंब यात्राएँ की थीं। अणुव्रत का महत्त्वपूर्ण आयाम है—नैतिकता। ईमानदारी के दो पहलू हैं—चोरी नहीं करना व झूठ नहीं बोलना। यह हमारे जीवन में रहे तो ज्यादा कल्याण करने वाली हो सकती है।

ईमानदारी-सच्चाई परेशान तो हो सकती है, पर परास्त नहीं हो सकती। झूठ के साथ मानो तनाव भी हो सकता है। बच्चों में भी ये संस्कार दिए जाते रहें। पर-धन धूलि समान। आदमी से नफरत न करें, झूठ और चोरी से नफरत करें। पाप के प्रति घृणा रहे। पापभीरूता रहे।

अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम गृहस्थों के जीवन में रहते हैं, तो जीवन अच्छा रह सकता है। छापर चातुर्मास संपन्न कर यहाँ आए हैं। जयाचार्य डालगणी, कालूगणी, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञजी भी यहाँ पधारे हुए हैं। यहाँ से चारित्रात्माएँ भी हैं। अच्छा क्षेत्र है। यहाँ के श्रावकों में धर्मसंघ और अध्यात्म के संस्कार बने रहें। ज्ञानशाला में भी बच्चे आते रहें। अणुव्रत, जीवन-विज्ञान का भी कार्य होता रहे।

यहाँ चारित्रात्माओं का भी लंबा प्रवास हुआ है। मैं भी मुनि अवस्था में आया था, तब दोनों गुरुओं ने मुझे आशीर्वाद दिया था। यहाँ धर्मोद्योत बना रहे। यहाँ की जनता में भी धार्मिकभावना पुष्ट रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में ऋषि-महर्षियों का विशेष योगदान रहा है। भारतीय संस्कृति में गुरु का महत्त्व है। गुरु से विद्या प्राप्त करने के लिए गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पित होना चाहिए, इससे आत्म-साक्षात्कार हो सकता है। गुरु का विनय करने वाला अध्यात्म का मार्ग प्रशस्त कर लेता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में महासभा के अध्यक्ष मनसुख सेठिया, महिला मंडल ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर ने संकल्प स्वीकार करवाए। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कृत कर्मों को भोगना ही पड़ता...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में रस को बहुत अधिक महत्त्व दिया गया है। परमात्मा के लिए कहा जाता है कि वह ही रस है। रस प्राप्ति के दो माध्यम हैं—पहला माध्यम है गुरु की सन्निधि और दूसरा माध्यम है—सत्संगति। इससे शरीर में रसायन बनते हैं जो हमारे शारीरिक और मानसिक विकास के लिए जरूरी है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में साध्वी संपूर्णयशा जी जो बोरावड़ चातुर्मास संपन्न कर आई हैं, ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ब्रह्माकुमारी से निर्मला दीदी, महिला मंडल, गौतम कोठारी, सभाध्यक्ष प्रवीण चोरड़िया, सुमित्रा सुराणा (ममं), सुनील सांखला (तेयुप), ज्ञानशाला, कन्या मंडल, राजस्थान सरकार के पूर्व मंत्री अजय सिंह तिलक, नगरपालिका, चेयरमैन, मदनलाल अठवाल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

विशाल जनमेदिनी को किया आध्यात्मिक संकल्पों से संकल्पित

माधावरम्, चेन्नई।

तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट के तत्त्वावधान में मुनि सुधाकर कुमार जी द्वारा नववर्ष का शुभारंभ मंगल मंत्रोच्चार के साथ प्रारंभ हुआ। नमस्कार महामंत्र से शुरू कार्यक्रम में दर्शना, अनुकृति छल्लाणी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति के साथ विभिन्न आध्यात्मिक अनुष्ठान प्रारंभ करवाया। विशाल जनमेदिनी ने मुनिश्री से आध्यात्मिक संकल्प ग्रहण कर अपने आपको संकल्पित किया। मुनि नरेश कुमार जी ने पैंसठिया छंद का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन प्रवीण सुराणा ने किया।

आचार्यश्री तुलसी के १०९वें जन्मोत्सव के आयोजन

गुरुदेव श्री तुलसी मानवता के मसीहा थे

विजयनगर

मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी का १०९वाँ जन्म दिवस की पूर्व संध्या पर 'एक शाम तुलसी के नाम' कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें संघ गायक महेंद्र सिंघी ने गुरुदेव के अनेक अविस्मरणीय गीतों का संगान किया।

इसी कड़ी में अणुव्रत रैली के माध्यम से अणुव्रत दिवस मनाया गया, जिसमें आचार्य महाप्रज्ञ स्कूल के बालिकाओं ने उत्साह के साथ भाग लिया।

मुनि रश्मि कुमार जी ने आचार्य श्री तुलसी के अनेक अवधानों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर मुनि प्रियांशु कुमार जी ने भी अपने वक्तव्य में गुरुदेव तुलसी के प्रति भाव प्रकट किए।

सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी, महिला मंडल उपाध्यक्ष महिमा पटावरी, ज्ञानशाला संयोजिका मनीषा घोषल ने स्वागत किया। श्रावक समाज से सुवालाल चावत, पिस्ताबाई, संतोष बाई, मिश्री लाल गांधी ने भी अपनी भावनाएँ रखी। संचालन राजेश चावत ने किया।

कोटा

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन गुलाबबाड़ी में आचार्यश्री तुलसी का १०९वाँ जन्म दिवस को अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आज के दिन इस धरती पर एक महामानव का अवतरण हुआ, जो इस दुनिया में विश्व संत तुलसी के नाम से विख्यात हुए। आचार्यश्री तुलसी का समग्र जीवन महकते गुलदस्ते की तरह है। उनके जीवन के हर कण की सौरभ अद्वितीय व विलक्षण है। प्रबल पुण्याई के अक्षयधाम तुलसी की कीर्तिपताका दिनदिगंत में लहराती हुई सात-समंदर पार तक युग-पुरुष के अक्षय-गौरव की कहानी कह रही है। उनका जन्म दिवस हमारे भीतर संकल्प चेतना को जागृत करे, हमारी कर्मजा शक्ति को नई दृष्टि प्रदान करे।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि संपूर्ण मानव जाति के प्रति वात्सल्य से आप्लावित अंतस से अभिशिक्त स्नेहिल स्पर्श की अनुगूंज का नाम है—आचार्य तुलसी।

साध्वी समत्वयशा जी ने संचालन करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ में अनगिनत अवदान दिए। साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी एवं साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने भावों की अभिव्यक्ति दी।

सभा के मंत्री धर्मचंद जैन, तेयुप मंत्री कमलेश जैन, अणुव्रत समिति के मंत्री भूपेश बरड़िया, महिला मंडल की कविता बाफना ने अपने भावों की प्रस्तुति दी।

ज्ञानशाला के बच्चों ने 'डोन्ट यूज मी' कार्यक्रम की प्रस्तुति दी।

ठाणे

तेरापंथ भवन में आचार्यश्री तुलसी का १०९वाँ जन्म दिवस शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में मनाया गया।

साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि शांति, संतुष्टि और आनंद ही जीवन का सार है। आचार्य तुलसी ने अपने जीवन का प्रत्येक पल बहुत विवेक के साथ जिया तभी वह अपनी संकल्पनाओं को मूर्त रूप दे पाए। जो व्यक्ति जीवन का प्रत्येक दिन अंतिम दिन की तरह जीता है वही व्यक्ति उजले भविष्य की नींव मजबूत कर सकता है। साध्वी मधुरयशा जी और साध्वी धवलप्रभा जी ने विचार रखे। पार्थ दुगड़, विमल गादिया, राहुल बालड़, सरला भूतोड़िया ने गीतिका प्रस्तुत की।

नवयुवती मंडल ने आचार्य तुलसी के अवदानों को दर्शाती कव्वाली प्रस्तुत की। ठाणे सिटी महिला मंडल अध्यक्ष अनिता धारीवाल एवं ठाणे सेंट्रल संयोजिका प्रिया मूथा ने विचार रखे। सभाध्यक्ष रमेश सोनी ने आभार ज्ञापन किया। साध्वी मार्दवयशा जी ने संयोजन किया।

गंगापुर

आचार्य तुलसी एक ऐसे क्रांतिकारी आचार्य हुए जिन्होंने धर्म की नई परिभाषा लिखी, अपने साठ वर्ष के कार्यकाल में नवीन क्षेत्रों में नए-नए आयाम दिए। धर्म को संप्रदाय के खोल से बाहर निकालकर उसे जन-साधारण को सुलभ करवाया। मूल सिद्धांतों को अक्षुण्ण रखकर युगानुकूल परिवर्तन को स्वीकार कर जैन धर्म को नवीन क्षितिज प्रदान किया। प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, अणुव्रत, नया मोड, आगम संपादन व साहित्य सृजन के लिए आचार्य तुलसी के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

उपर्युक्त विचार साध्वी विशदप्रज्ञा जी ने आचार्यश्री तुलसी के १०९वें जन्म दिवस के अवसर पर स्थानीय कालू कल्याण कुंज में आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किए। साध्वी मंदारप्रभा जी ने आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें अप्रतिम आचार्य व अलौकिक व्यक्तित्व बताया।

अणुव्रत समिति अध्यक्ष रमेश हिरण ने आचार्य तुलसी को बीसवीं सदी का महान नायक बताते हुए कहा कि उनका एक अवदान अणुव्रत ही मानव जाति को त्राण देने में सक्षम है।

कार्यक्रम में ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा प्रस्तुति दी गई। इसी कार्यक्रम में स्थानीय महिला मंडल द्वारा एक टॉक शो आयोजित किया गया, जिसमें आचार्य तुलसी के बारे में विभिन्न राजनेताओं, धर्माचार्यों व विद्वजनों के विचारों की सजीव प्रस्तुति दी गई।

सभाध्यक्ष घेवरचंद बाबेल, नवरत्न हिरण, तेयुप के सदस्य व नेमीचंद भंडारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन तेयुप के अंकित मेहता द्वारा किया गया।

नाथद्वारा

शासनश्री मुनि रवींद्र कुमार जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी का १०९वाँ जन्म दिवस एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुनि रवींद्र कुमार जी ने कहा कि चाँद में दाग हो सकता है पर तुलसी बेदाग हैं। आचार्य तुलसी महान संत हुए हैं। मुनि अतुल कुमार जी ने कहा कि बीसवीं सदी के आध्यात्मिक क्षितिज पर प्रमुखता से उभरने वाले एक महान संत आचार्यश्री तुलसी की पावन स्मृति का अर्थ है समाज और देश को उन्नति की दिशाओं की ओर अग्रसर करना।

आचार्य तुलसी सचमुच सामान्य इंसान नहीं थे। वे धर्म, दर्शन, कला, साहित्य और संस्कृति के प्रतिनिधि ऋषि पुरुष थे। उनका संवाद, साहित्य, साधना, सोच अपने और संकल्प सभी मानवीय मूल्यों के उत्थान से जुड़े थे। जिनका हर संवाद संदेश बन गया। बालवय के संन्यास के पथ पर प्रस्थित होकर वे क्रमशः आचार्य, अणुव्रत, अनुशास्ता, राष्ट्रसंत एवं मानव कल्याण के पुरोधा के रूप में विख्यात हुए हैं।

इस अवसर पर प्रतिभा सम्मान समारोह का कार्यक्रम भी आयोजित हुआ। जिसमें मीहिता चंडालिया, शिवम सामोता, निशका सोनी, हेतल डागलिया, मनीष डागलिया, श्रुति पोरवाल, सम्यक् पोरवाल, महिमा तलेसरा, प्रियंका चपलोत, हिमांशु जैन, चाहत सामोता, आयुष राठौड़, प्रणव चपलोत, विमल तलेसरा, चिनल तलेसरा, मनन जैन, तुलसीदास तलेसरा, सुमन कोठारी, पूनम तलेसरा, प्रियांक तलेसरा को विशेष दर्जा प्राप्त करने के लिए सम्मानित किया गया।

रंगोली प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए दीक्षि पोरवाल, दीशिता चंडालिया, श्रेया पोरवाल, आशी जैन को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में महिला मंडल अध्यक्षा रसीला सोनी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष शुक्रिया, अणुव्रत समिति कोषाध्यक्ष कमलेश धाकड़, मंजु मूथा एवं पूनम तलेसरा ने अपने विचार रखे। सभा अध्यक्ष निर्मल छाजेड़ ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री प्रियांक तलेसरा ने किया।

वृहद मंगलपाठ का आयोजन

साहूकारपेट।

तेरापंथ भवन में वृहद मांगलिक अनुष्ठान में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने प्रभावक जैन मंत्रों के साथ वृहद मंगल पाठ का श्रवण करवाया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि आज हम सभी नए वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। यह प्रवेश आनंदमय, शांतिमय, सौभाग्यवर्धक, स्वास्थ्य संपन्न, मंगलकारी और अध्यात्ममय हो। मंत्र शक्ति से ऊर्जा की प्राप्ति होती है। वह ऊर्जा आत्मा को शुद्ध, बुद्ध और प्रबुद्ध बनाती है।

साध्वीश्री जी ने महावीर आराधना स्वरूप स्वाध्याय करने की विशेष प्रेरणा दी। तेरापंथ भवन में त्रिदिवसीय जप साधना में श्रावक परिवार ने संभागिता दर्ज कराई।

तेयुप द्वारा 'भगवान महावीर मेगा जैन आर्ट एंड ग्राफ्ट' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें ६० से अधिक प्रतियोगियों ने अपनी कलाकृति प्रस्तुत की।

साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी सिद्धियशा जी, साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी, साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी एवं साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी द्वारा महावीर स्तुति प्रस्तुत की गई। साध्वी राजुलप्रभा जी ने कहा कि महावीर निर्वाणोत्सव का पवित्र दिन हमें भगवान महावीर के आदर्श जीवन की याद दिलाता है, शक्ति प्रदायक साधना के संकल्प की प्रेरणा देता है।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष उगमराज सांड ने अपने विचार व्यक्त किए। जैन विश्व भारती, लाडनूं के नवमनोनीत अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़ का तेरापंथ सभा द्वारा सम्मान किय गया।

वृहद मंगल पाठ का आयोजन

देशनोक।

मुनि आकाश कुमार जी के सान्निध्य में दीपावली पर विभिन्न प्राचीन मंत्रों से युक्त वृहद मंगल पाठ का आयोजन किया गया। इस प्रकार की मांगलिक का आयोजन देशनोक के इतिहास में संभवतः प्रथम बार था। देशनोक श्रावक-श्राविकाओं के लिए भी यह नया और सुखद अनुभव था।

तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा आयोजित दीपावली एवं भगवान महावीर निर्वाण दिवस पर दीपों का त्योहार-त्याग का उपहार द्वारा देशनोक गाँव के लगभग शताधिक श्रावक-श्राविकाओं ने संकल्प ग्रहण किए।

तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन

जसोल।

तेरापंथी सभा, तेमम, तेयुप, कन्या मंडल, जसोल अभातेमम के निर्देशन में सोहनी देवी सालेचा की अध्यक्षता में शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने नमस्कार महामंत्र का उच्चारण किया। धनतेरस के दिन उपासक व संस्कारक पवन छाजेड़ ने जैन संस्कार विधि से दीपावली पूजन की जानकारी दी। अभातेमम के तत्त्वावधान में नारी लोक द्वारा प्रेषित 'दीपावली पूजन अनुष्ठान' को विधि अनुसार करवाए।

साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि आज का दिन दो महापुरुषों की जीत की खुशी में मनाया जाता है। आध्यात्मिक जगत में भगवान महावीर ने जन्म-मरण की परंपरा को अंत किया व गौतम स्वामी को केवल्यज्ञान हुआ। आज के दिन अयोध्या के राजा भगवान श्री राम ने वनवास पूरा कर घर वापसी की थी। कई भाई-बहनों ने तेले का तप कर अपने आराध्य को श्रद्धांजलि दी।

आध्यात्मिक अनुष्ठान का आयोजन

देशनोक।

भगवान महावीर निर्वाण दिवस के अवसर पर तेरापंथ भवन, देशनोक में मुनि आकाश कुमार जी एवं मुनि हितेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में सूर्योदय से सूर्यास्त तक महावीर स्वामी केवल ज्ञानी, गौतम स्वामी चउनाणी का अखंड जप संपन्न हुआ। इस जप में तेरापंथ समाज के सभी भाई-बहनों ने भाग लिया।

✦ *दुनिया में चार चीजें दुर्लभ मानी गई हैं–मनुष्यत्व, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

उत्सव रिश्तों का प्रेम देवरानी-जेठानी का कार्यक्रम

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं के तत्त्वावधान में मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी-जेठानी का कार्यक्रम न्यू तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र व बहनों के द्वारा प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया गया।

महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि कार्यक्रम में छह देवरानी-जेठानी के जोड़ों परामर्शक लुणी देवी गोलेच्छा एवं पुष्पा देवी गोलेच्छा, निवर्तमान अध्यक्षा अयोध्या देवी ओस्तवाल व निर्मला देवी ओस्तवाल विमला देवी ओस्तवाल, उपाध्यक्ष रानी बाफना एवं विद्या बाफना, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा व समता सालेचा, संगीता रांका, ममता सालेचा व सुमन सालेचा ने भाग लिया।

इस अवसर पर मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि वर्तमान में देवरानी-जेठानी में प्रेमपूर्वक साथ में रहना बहुत ही दुर्लभ बात है। देवरानी-जेठानी जब साथ रहती हैं तो दोनों की निश्चितता बनी रहती है और दोनों का काम भी आसान हो जाता है।

देवरानी-जेठानी के जोड़ों को महिला मंडल की अध्यक्षा निर्मला देवी संकलेचा की तरफ से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन मंत्री संगीता बोथरा ने किया। इस कार्यक्रम में परामर्शक पीपी देवी ओस्तवाल, अभातेममं सदस्य व मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा, उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़, सहमंत्री इंदु भंसाली एवं रेखा बालड़, पूर्व अध्यक्ष सहित लगभग ८० बहनें उपस्थित थीं।

जसोल।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में सोहनी देवी सालेचा की अध्यक्षता में 'उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी-जेठानी का' कार्यशाला का आयोजन किया गया।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से गोष्ठी शुभारंभ हुआ। युवती व महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण गीत गाए। महिला मंडल मंत्री ममता मेहता ने सभी का स्वागत किया। कुल पाँच ग्रुप में से तीन ग्रुप ने देवरानी-जेठानी के ग्रुप में भाग लिया। टोटल चार राउंड में प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। पहला राउंड में परिचय के साथ 'प्रश्न-उत्तर' बाकी राउंड में 'वन मिनट गेम' खिलाए गए।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि संयुक्त एवं एकल परिवार की अपनी-अपनी एहमियत होती है। संयुक्त परिवार में अनेक रिश्तों में एक महत्त्वपूर्ण रिश्ता है–देवरानी-जेठानी का। रिश्तों में मिठास बनी रहने की मंगलभावना प्रेषित की। टीम के निर्णायक उपाध्यक्ष नीतू सालेचा ने जीतने वाली जोड़ी को इनाम दिया। साथ में सबका आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष अरुणा डोसी ने किया। बहनों की उपस्थिति सराहनीय रही।

सरदारपुरा, जोधपुर।

साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी-जेठानी का' का आयोजन तातेड़ भवन में किया गया। महिला मंडल की बहनों द्वारा गीतिका के संगान से कार्यक्रम का मंगलाचरण किया गया।

महिला मंडल की अध्यक्षा सरिता कांकरिया ने समस्त देवरानी-जेठानी युगल का स्वागत किया। देवरानी-जेठानी की जोड़ी द्वारा गीतिका की प्रस्तुति हुई।

साध्वी जिनबाला जी ने कहा कि कार्यक्रम 'उत्सव रिश्तों का' रिश्तों में प्रेम उत्साह के ऑक्सीजन का संचार करने वाला है। यदि देवरानी-जेठानी में तालमेल बैठ जाए तो परिवार स्वर्ग बन जाता है।

साध्वी करुणाप्रभा जी ने कहा कि देवरानी-जेठानी मिलकर परिवार को ऐसा बनाएँ, जहाँ स्नेह की छत हो, विश्वास की दीवारें, अनुशासन की खिड़कियाँ हों, सहयोग सेवा के दरवाजे हों और वहाँ हँसते-खेलते परिवार के सदस्य हों।

साध्वी भव्यप्रभा जी ने कहा कि देवरानी-जेठानी एक-दूसरे की छोटी-छोटी बातों को सहन करना सीखें, घर स्वर्ग बन जाएगा। साध्वी महकप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया। १४ वर्ष से अधिक समय से एक साथ रहने वाली देवरानी-जेठानी ७ जोड़ों ने अपने अनुभव बताए।

कार्यक्रम में देवरानी-जेठानी के २० से अधिक जोड़े सहभागी बने और साथ ही देवरानी-जेठानी को कपल गेम खिलाया गया और विजेता जोड़ी को महिला मंडल द्वारा पुरस्कृत किया गया।

आमेट।

अभातेममं के निर्देशानुसार साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में तेममं द्वारा 'उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी-जेठानी' का कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि हर व्यक्ति का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है, चाहे वह देवरानी हो या जेठानी, सास हो या बहू। लेकिन स्वतंत्र अस्तित्व होकर भी ग्रुप में रहना बहुत बड़ी बात है। साध्वीश्री जी ने एक छोटे से गेम के माध्यम से समझाया।

कार्यशाला में ४ देवरानी-जेठानी के जोड़ों का सम्मान किया गया, जिसमें अणची बाई सिंघवी व आगूबाई सिंघवी ५६ वर्ष, मंजु देवी गेलड़ा व मीना देवी गेलड़ा २६ वर्ष, लीलादेवी पितलिया व मयूरी देवी पितलिया २६ वर्ष, हेमा भंडारी व कमल भंडारी ११ वर्ष से साथ में रहे हैं। इन सभी को स्थानीय महिला मंडल द्वारा सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में पधारे हुए सभी महिलाओं का स्वागत सुरेखा ओस्तवाल ने किया। मंच संचालन तेममं मंत्री संगीता पामेचा ने किया। कार्यक्रम में लगभग ८५ महिलाओं ने भाग लिया। तेममं अध्यक्ष मीना गेलड़ा ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की व सभी बहनों का आभार ज्ञापन किया।

उधना।

साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी-जेठानी का' कार्यक्रम तेरापंथ भवन में आयोजित किया।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से की गई। मंगलाचरण देवरानी-जेठानी के जोड़ों द्वारा किया गया। अध्यक्षा जशु बाफना द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया।

साध्वी लब्धिश्री जी ने कहा कि परिवार जो एक-दूसरे के सुख-दुःख में काम आते हैं, वह परिवार प्रेम, सौहार्द, समर्पण का प्रतीक होता है। जहाँ ४ से १४ होते हैं, वहाँ जरूरत होती है एक-दूसरे को सहन करने की, एक-दूसरे को समझने की, लॉन्ग लाइफ के लिए एक-दूसरे को समझना आवश्यक है।

छोटे-छोटे नाटक, कविता, शब्द-चित्र, सॉन्ग के माध्यम से प्रस्तोताओं ने देवरानी-जेठानी के खट्टे-मीठे रिश्ते को दर्शाया।

कार्यक्रम में १६ ग्रुप जो अभी संयुक्त परिवार में एवं २१ जोड़ी देवरानी-जेठानी उपस्थित रही। २२ साल से साथ में देवरानी-जेठानी की जोड़ी को विशेष सम्मानित एवं १५ साल से ज्यादा साथ में रहने वाली ४ जोड़ी को सम्मानित किया गया।

अभातेममं, गुजरात प्रभारी श्रेया बाफना की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम में लगभग २६० बहनों की उपस्थिति रही। गेम खेलकर सभी ने उत्साह से भाग लिया। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम संयोजिका उपाध्यक्षा महिमा चोरड़िया एवं सहमंत्री स्वीटी बाफना का श्रम रहा। संचालन उपाध्यक्षा महिमा चोरड़िया ने आभार मंत्री सुनीता चोरड़िया ने किया।

शृंखलाबद्ध मौन अनुष्ठान का आयोजन

कोयंबटूर।

अभातेममं द्वारा निर्देशित 'मौन एक लाभ अनेक' के अंतर्गत 'शृंखलाबद्ध मौन अनुष्ठान' का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल द्वारा साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी के चातुर्मास में किया गया। जिसमें ३० बहनों द्वारा २४ घंटे का मौन किया। १० बहनों ने ६, ४, २ और १ घंटे का मौन भी किया।

मौन साधना अनुष्ठान की संयोजिका सुशीला बाफना के अथक प्रयास से अनुष्ठान सफल रहा। सभी मौन साधिका बहनों को मंडल अध्यक्षा मंजु गिड़िया ने साधुवाद दिया।

Aid to Assisting Hands कार्यक्रम

टी-दासरहल्ली।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं द्वारा शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में टी-दासरहल्ली ने निर्माण परियोजना के अंतर्गत 'Aid to Assisting hands' और 'अंकुरम कार्यशाला' का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ।

अध्यक्ष रेखा मेहर ने सभी बहनों का स्वागत किया एवं निर्माण परियोजना की विस्तृत जानकारी दी। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि सृष्टि के निर्माण में महिलाओं की बहुत बड़ी भूमिका रहती है। गर्भावस्था में महिला के माँ के सात्त्विक विचार आध्यात्मिक उपासना, जप आदि का गर्भस्थ शिशु पर निश्चित रूप से प्रभावी बनता है, इसलिए हर महिला सावधान रहे, सजग रहे। शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि निर्माण परियोजना के द्वारा टी-दासरहल्ली महिला मंडल ने अपने व्यवहार से अपने पास काम करने वाले वर्करों को सम्मानित कर उनमें अहिंसा का एक बीजारोपण कर दिया है।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मोनिका गांधी, हर्षिता जीरावला, सुनिधि मांडोत ने होम हेल्पर्स को स्वस्थ जीवन के महत्त्व बताए। उन्हें छोटे-छोटे टिप्स दिए तथा पौष्टिक आहार के बारे में जानकारी दी।

होम हेल्पर्स बहनों ने अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम तो हमने बहुत देखे परंतु ऐसा कार्यक्रम पहली बार देखा जो सिर्फ हमारे लिए आयोजित हुआ है।

महिला मंडल द्वारा अतिथिगण का सम्मान किया गया। होम हेल्पर्स का भी गिफ्ट देकर सम्मान किया गया।

उपाध्यक्षा नेहा चावत द्वारा संचालन किया गया तथा कोषाध्यक्ष नम्रता पितलिया के द्वारा आभार ज्ञापन किया गया। महिला मंडल की बहनें, कन्या मंडल, किशोर मंडल सबकी अच्छी उपस्थिति रही।

सकारात्मक चिंतन निकालता है परिवार के सौंदर्य को

हिरियुर, कर्नाटक।

अभातेममं के तत्त्वावधान में मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में 'सकारात्मक सोच' कार्यशाला का आयोजन महिला मंडल द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। समाज की सबसे छोटी इकाई होती है–परिवार। परिवार वह बगीचा है जिसमें अनेक प्रकार के फूल एक साथ रहकर अपनी महक बिखेरते हैं। धरती पर स्वर्ग तक उतर आता है, जब किसी परिवार में खुशहाली छाई रहती है।

आपस में सामंजस्य का सेतु बनाए रखें एवं अपने चिंतन को सकारात्मकता से सराबोर रखिए, तभी आप उस स्वर्ग में होंगे, जिसकी कल्पना सपनों में होती है। स्वार्थ की खटास रिश्तों को फाड़ देती है। रिश्तों को अगर मधुर बनाना है तो एक-दूसरे के प्रति प्रांजल भावना रखें। परिवार में पाँच 'वी' का प्रयोग करें। विनय, विवेक, वात्सल्य, विश्वास और विशेष। दया वाणी मधुरता जिस घर में इनका प्रयोग होता है वहाँ हमेशा शांति का वास होता है।

मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि जो रखता है शांति, उसके जीवन में नहीं आती कभी भ्राँति, जीवन में जो रखता है दिल में आनंद, उसके जीवन में आता है हमेशा परमानंद।

बाल संत जयदीप कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल ने गीत का संगान किया।

✦ *ज्ञानवान व्यक्ति अनेक समस्याओं का समाधायक बन सकता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन

कोटा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में तेरापंथी सभा द्वारा 'तप अभिनंदन समारोह' तेयुप द्वारा 'दीपावली पूजन कार्यशाला', टीपीएफ द्वारा 'मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह' का आयोजन किया गया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि चातुर्मास काल में श्रावक-श्राविकाओं के हृदय कमल में तप के सुमन खिलने लगते हैं। चारों ओर तप की तरंगें तरंगित होने लगती हैं। कोश में भी इस बार अच्छी तपस्याएँ हुई हैं। साध्वीश्री ने कहा कि दीपावली पूजन का अपना महत्त्व है, तेयुप जैन संस्कार विधि के द्वारा दीपावली पूजन की प्रेरणा दी।

साध्वीश्री जी ने कहा कि टीपीएफ ने मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान किया। प्रतिभा संपन्न छात्र हमारे समाज के गौरव हैं। शैक्षणिक योग्यता के साथ-साथ आंतरिक शक्ति का संवर्धन होना जरूरी है। आंतरिक शक्ति संवर्धन के लिए प्रार्थना, गुरुवंदना एवं जय अनुदान के लिए योजित करें।

सभा अध्यक्ष संजय बोथरा ने तपस्वियों का स्वागत करते हुए सभी तपस्वियों का तप अभिनंदन-पत्र के द्वारा विभिन्न पदाधिकारियों से सम्मान करवाया। मंत्री धर्मचंद जैन ने बधाई दी। जैन संस्कारक भूपेंद्र बरड़िया ने जैन संस्कार विधि से दीपावली पूजन कैसे करें? इसकी जानकारी दी। मंत्री कमलेश जैन, सहमंत्री एवं मीडिया प्रभारी सौरव दस्साणी एवं उमेश गोयल का भी सहयोग रहा। टीपीएफ अध्यक्ष अखिलेश कांठेड़ ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। सात विद्यार्थियों को गोल्ड मेडल, सिल्वर मेडल एवं ब्रोन्ज मेडल प्रदान किया गया। संचालन मंत्री आशीष बरड़िया ने किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष अशोक दुगड़ ने भाव व्यक्त किए।

कोटा सभा द्वारा महादानी श्राविका भीखी देवी सेठिया, अमरावदेवी सेठिया, कन्हैयालाल पुगलिया का सम्मान किया गया। सभा द्वारा चेन्नई से समागत पद्मा दुगड़, रेखा मरलेचा, नीमिता एक-निष्ठा तथा ठाणे मुंबई से समागत मदनलाल श्रीमाल, वैजयंती श्रीमाल, जयेश, प्रांजल श्रीमाल का सम्मान किया गया।

'विनय को प्रतिष्ठित करता है आध्यात्म' कार्यशाला का आयोजन

टी-दासरहल्ली।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में आयोजित 'विनय को प्रतिष्ठित करता है आध्यात्म' कार्यशाला में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा व्यक्ति अकेला नहीं जीता, वह परिवार व समाज के बीच में जीता है जहाँ परस्परता है तथा एक-दूसरे पर निर्भरता है। भगवान महावीर की वाणी के अनुसार जहाँ सौहार्द, अनुशासन एवं निगर्विता है वहाँ आध्यात्म है। इन महान सदगुणों को अपने जीवन में प्रतिष्ठित करने वाला विनीत होता है, ऋजुता सम्पन्न होता है। जीवन के हर मोड पर वह कसौटी के साथ खरा उतरता है।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा कि विनय शब्द परिवार और समाज को प्रतिष्ठित करता है। जहाँ विनय हैं वहाँ समर्पण है, लक्ष्मी है तथा आचरणात्मक जीवन शैली है।

साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी, साध्वी चेलनाश्रीजी ने विचार व्यक्त किए। सभा अध्यक्ष नवरतन गाँधी ने विचार रखे। इस अवसर पर तेरापंथ सभा ट्रस्ट परिवार, तेमम परिवार, तेयुप परिवार एवं दासरहल्ली व निकटतम क्षेत्रों के श्रावक-श्रविकाओं की उपस्थिति रही। संचालन सभा मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

कांदिवली।

साध्वी निर्वाणश्री जी एवं साध्वीवृंद का कांदिवली में रूपचंद दुगड़ के निवास स्थान से दहिसर के लिए विहार हुआ। साथ ही भायंदर से साध्वी विद्यावती जी व साध्वीवृंद का विहार तेरापंथ भवन, कांदिवली की ओर हुआ। दोनों का आध्यात्मिक मिलन बोरीवली के सुरोमय संजय गांधी नेशनल पार्क में हुआ।

मिलन समारोह का रोमहर्षक दृश्य बयां नहीं किया जा सकता। मानो जैसे जनसैलाब उमड़ पड़ा हो। दोनों विहार में २०० से अधिक उपस्थिति रही। विहार को सफल बनाने में कांदिवली, बोरीवली, मलाड़, दहिसर, मीरा रोड, भायंदर की सभी सभा-संस्था की उपस्थिति रही।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✳ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

टेक्सास, यूनाइटेड स्टेट।

यूनाइटेड स्टेट (टेक्सास) प्रवासी सुंदर देवी बोथरा के सुपुत्र व पुत्रवधू मयंक-कीर्ति बोथरा का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विमल गुनेचा, मनीष बरमेचा ने संपूर्ण विधि व मंत्रोच्चार से ऑनलाइन जूम पर संपादित करवाया। इस कार्यक्रम में यूएस से सहयोगी के रूप में सुंदर देवी बोथरा ने मुख्य भूमिका निभाई।

बोथरा परिवार की तरफ से सुंदर देवी बोथरा ने पधारे हुए सभी संस्कारकों व मेहमानों का आभार ज्ञापन किया।

दिल्ली।

हरिचंद नाहटा दिल्ली प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रवीण गोलछा, हेमराज राखेचा ने संपूर्ण विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

संस्कारकों द्वारा सुमधुर गीतिका का संगान किया गया। तेयुप, दिल्ली की तरफ से आभार ज्ञापन किया गया। तेयुप की तरफ से नाहटा परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

सूरत।

नाल निवासी, सूरत प्रवासी संपतलाल गुलगुलिया के सुपौत्र व सुशील गुलगुलिया के सुपुत्र जयकुमार-श्रद्धा गुलगुलिया के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, प्रकाश डाकलिया, मनीष कुमार मालू, बजरंग बैद ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

सुशील कुमार, गोपीचंद व उनके पूरे परिवार ने संस्कारकों व सभी पारिवारिकजनों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

अहमदाबाद।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा बैद परिवार के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया।

संस्कारक प्रदीप बागरेचा एवं दीपक संचेती ने मंगलाचरण कर मंत्रोच्चार के साथ विधि को संपादित किया। कार्यक्रम का संचालन संस्कारक दीपक संचेती ने किया। परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट दी गई। परिवार की ओर से अमरावमल बैद ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

नामकरण संस्कार

सूरत।

लाडनूं निवासी, किशनगंज प्रवासी अशोक-सीमा पाटनी के सुपुत्र मनीष-भावना पाटनी के प्रांगण में जुड़वा पुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, धर्मचंद सामसुखा ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

छतर सिंह व अशोक ने उपस्थित पारिवारिकजन व संस्काराकों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

विवाह संस्कार

जसोल।

संदीप छाजेड़ पुत्र धनराज, जसोल संग जशोदा जैन पुत्री अशोक कुमार, कनाना का शुभ विवाह जैन संस्कार विधि से संस्कारक पुष्पराज कोठारी और जेटीएन प्रतिनिधि नीलेश सालेचा द्वारा विवाह संपन्न कराया गया।

कार्यक्रम में अभातेयुप सदस्य एवं तेयुप अध्यक्ष तरुण भंसाली और तेयुप मंत्री अमित सुराणा की उपस्थिति रही। तेयुप मंत्री अमित सुराणा ने परिवार जनों का आभार व्यक्त किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 नवंबर - 4 दिसंबर, 2022

✦ *क्रोध, मान, माया और लोभ को छोड़ने का प्रयास करने वाला व्यक्ति अपना हित साधने की दिशा में आगे बढ़ सकता है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

महावीर के सिद्धांत अतीत से आज ज्यादा उपयोगी

संगरूर।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी, मुनि देवेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में भगवान महावीर का दीक्षा दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर के सिद्धांत आज भी अतीत से ज्यादा उपयोगी हैं। उन्होंने कहा कि भगवान ने अहिंसा संयम तप को धर्म की कसौटी बताया। उन्होंने कहा कि आज हिंसा, असंयम और भोग का क्रम बढ़ता जाता है इसलिए सर्वभ अशांति का माहौल देखने को मिल रहा है। अहिंसा, संयम और तप की त्रिवेणी द्वारा प्रत्येक व्यक्ति जीवन में अमन-चैन को प्राप्त कर सकता है।

मुनि देवेंद्र कुमार जी ने अपने विचारों द्वारा बताया कि सुख का साधन संयम है। आज सरकार भी पानी, बिजली के संयम की प्रेरणा दे रही है। असंयम से समस्या का कभी समाधान नहीं हो सकता। इच्छाओं को भोगकर कोई सुखी नहीं बन सकता, क्योंकि भगवान ने कहा–इच्छाएँ आकाश के समान अनंत हैं, सीमित श्वासों के द्वारा असीम इच्छाओं की पूर्ति कठिन है, इसलिए इच्छाओं पर नियंत्रण करके ही व्यक्ति सुख-शांति, आनंद को प्राप्त कर सकता है।

कार्यक्रम में मुनि आर्जव कुमार जी ने गीत एवं विचार प्रस्तुत किए। मुनि नमि कुमार जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। अशोक जैन ने तपस्वी भाई विजय कुमार जैन के १३३ आयंबिल एवं गायत्री देवी जैन के एक सौ इकतीस आयंबिल पर दोनों का परिचय देते हुए साधुवाद दिया। विजय कुमार जैन का स्वागत विजय गुप्ता, डॉ० आर०सी० जैन, सोमनाथ जैन ने तथा गायत्री बहन का सम्मान मीना जैन, सुषमा मित्तल, सुषमा जैन, कृष्णा जैन ने किया। रविवारीय जाप कुंदन जैन के निवास स्थान पर दिन में २ से ४:३० तक रखा गया। प्रत्येक रविवारीय जाप की जिम्मेदारी युवक परिषद के अध्यक्ष-मंत्री ने ली। कार्यक्रम में दो-दो सामायिक का क्रम व्यवस्थित रहा।

श्रावक सम्मेलन का आयोजन

कानपुर।

गुरुकृपा से साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी का चातुर्मास कानपुर मिला। साध्वीवृंद ने धर्म की लौ जलाकर जन-जन की आत्मा को आलोकित किया। साध्वीश्री जी के सान्निध्य में अनेकानेक आध्यात्मिक कार्यक्रम हुए। इसी कड़ी में तेरापंथी सभा द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य स्तरीय श्रावक सम्मेलन साध्वीश्री जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

ज्ञानार्थी मीत भूतोड़िया ने पार्श्वनाथ स्तुति से मंगलाचरण किया। कानपुर सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा ने आगंतुक श्रावक समाज का स्वागत किया। साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी ने कहा कि भैक्षव शासन प्राणवान एवं अनुशासित धर्मसंघ है। संघ के साधु-साध्वी धर्मसंघ की प्रभावना बढ़ाने में लगे हुए हैं।

साध्वी भावनाश्री जी ने कहा कि श्रावक-श्राविका के बिना साधु-साध्वी की संयम यात्रा नहीं चल सकती तो साधु-साध्वी के बिना श्रावक का आध्यात्मिक विकास नहीं हो सकता। साध्वी सुधा कुमारी जी ने श्रावक सम्मेलन विषय पर गीत प्रस्तुत किया। साध्वी दीप्तियशा जी ने कविता प्रस्तुत की। तेयुप, कानपुर अध्यक्ष दिलीप मालू, पूर्व अध्यक्ष गणेशमल जम्मड़, महासभा सदस्य धनेश भूतोड़िया, तेजकरण बुच्चा, मिर्जापुर से भीखण सेठिया, रायबरेली से नम्रता जैन आदि ने अपने विचार रखे।

तेमम अध्यक्ष शालिनी बुच्चा ने अपनी टीम की बहनों एवं तेयुप के साथ गीत प्रस्तुत किया। प्रियंका और ऋतु जैन ने महावीर स्तुति की। धनराज सुराणा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। निवर्तमान अध्यक्ष पूनमचंद सुराणा ने आभार ज्ञापन किया। सम्मेलन का संचालन मंत्री संदीप जम्मड़ ने किया। साध्वीश्री के मंगलपाठ के पश्चात साध्वी दीप्तियशा जी ने रोचक प्रतियोगिता कराई। इस सम्मेलन में लखनऊ, रायबरेली, मिर्जापुर एवं कानपुर के अनेक श्रावक उपस्थित थे।

तीन दिवसीय लोगस्स कल्प अनुष्ठान का आयोजन

डी०वी० कॉलोनी।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद में लोगस्स कल्प अनुष्ठान रखा गया। जिसमें लगभग ३०० भाई-बहनों ने भाग लिया। साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि वर्तमान युग समस्या बहुल है। कोई तन से रुग्ण है, तो कोई मन से और कोई ऊपरी हवा से प्रभावित है। इन सभी से निजात पाने की अचूक औषधि है–लोगस्स कल्प अनुष्ठान।

जब हम २४ तीर्थंकरों की स्तुति करते हैं तो हमारे आसपास पॉजिटिव वाइब्रेशन आते हैं जो हमें ऊर्जावान व शक्ति संपन्न बनाने में सक्षम हैं। और जब हम स्वयं शक्तिसंपन्न बन जाएँगे तब बाहरी हवा हमें प्रभावित नहीं कर सकेगी।

साध्वीश्री जी ने कहा कि १३-१४ व अमावस्या का दिन साधना की दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण है और सूर्य ग्रहण या चंद्र ग्रहण उसमें लोगस्स की साधना विशेष लाभदायी होगी। इसलिए ग्रहण काल में इसका प्रयोग कर ऊर्जा संपन्न बनें, तभी हम सुख और शांति का अनुभव कर सकेंगे।

जीने की विशिष्ट कला का नाम है - जीवन विज्ञान

किशनगढ़।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में ४५वें महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस को आचार्य धर्म सागर जैन पब्लिक स्कूल में जीवन विज्ञान दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा कि जीवन जीने की एक विशिष्ट कला का नाम है–जीवन-विज्ञान। जीने के लिए सभी प्राणी जिया करते हैं, परंतु मनुष्य को विवेकशील प्राणी माना जाता है। वह अपनी प्रज्ञा का जागरण कर जीवन को कलात्मक ढंग से ही जी सकता है।

मुनि अमन कुमार जी ने कहा कि छात्र जीवन में बौद्धिकता के साथ मानसिक व भावनात्मक विकास कर सकता है। आज के युग में शिक्षा का बहुत विकास हुआ है। प्रत्येक बालक-बालिका उच्च से उच्च डिग्री हासिल करना चाहते हैं। इंटरनेट मोबाइल ने बच्चों की दिशा में बहुत कुछ परिवर्तन कर दिया है। आवश्यकता है भावी पीढ़ी इन छात्र-छात्राओं को सम्यक् मार्गदशन मिले, जिससे यह जीवन को स्वस्थ, मस्त और आत्मस्थ बनकर आनंद से जी सकें।

मुनि सुबोध कुमार जी ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य सर्वांगीण विकास होना चाहिए। एकांगी विकास का कोई मूल्य नहीं होता।

इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्य सोनू जैन, हिंदी विभाग के प्रिंसिपल ओमनायक, अध्यक्ष माणकचंद गंगवाल, सचिव मिलापचंद जैन ने मुनिवर का स्वागत आभार माना। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष माणकचंद गेलड़ा, बिमल भंडारी, प्रकाश मालू ने विद्यालय परिवार के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। छात्र-छात्राओं ने नशामुक्ति व जीवन-विज्ञान के प्रयोग की प्रतिज्ञा की।

तप अभिनंदन समारोह

बैंगलोर।

तेरापंथ सभा भवन में तप अभिनंदन समारोह में मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर ने मुक्ति के चार सोपान बताए, उसमें चौथा सोपान है–तप। तप वह प्रकाश पुंज है जिसके आलोक से आत्मा आलोकित होकर नई रश्मियों को प्राप्त करती है। तप वह मंगल कलश है जिसे पीने वाला अपने जीवन को मंगलमय बना लेता है।

तप के अनेक प्रकार हैं, जिसमें एक विशिष्ट प्रकार है–आयंबिल। आयंबिल तप करना अर्थात अपनी रसना पर विजय प्राप्त करना। इस तप की आराधना करने से आधि-व्याधि का विनाश होता है और परम समाधि को व्यक्ति प्राप्त करता है। बहन रेखा ने आयंबिल का मासखमण कर अपने मजबूत मनोबल का परिचय दिया है।

पहले तपस्या का मासखमण अब आयंबिल का मासखमण एक विशेष बात है। इसी प्रकार तप के क्षेत्र में बढ़ते रहें।

मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि जो बनता है तप से तल्लीन, वह देखता है मुक्ति का सीन, जीवन हो जाता है रंगीन, कर्म हो जाते उसके विलीन। बाल संत जयदीप कुमार जी ने गीत का संगान किया।

सभा अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़ ने विचार व्यक्त किए। अभिनंदन पत्र का वाचन प्रकाश चंद लोढ़ा और साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन कन्हैयालाल सिंघवी ने किया। परिवार की ओर से गीतिका का संगान किया गया।

प्रतियोगिताएँ ज्ञान वृद्धि का माध्यम

गंगाशहर।

मुनि शांति कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ प्रबोध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के प्रथम चरण में लगभग सत्तर संभागियों ने भाग लिया। जिसमें से २८ प्रतिभागी दूसरे चरण में पहुँचे। सात ग्रुपों के मध्य कुल ५ राउंड हुए, जिसमें प्रदीप ललवानी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। पूजा बुच्चा द्वितीय एवं मनाली भूरा तृतीय रही।

मुनि जितेंद्र कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ प्रबोध आचार्यश्री तुलसी की एक अद्वितीय रचना है। जिसमें तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु के जीवन का विस्तृत विवेचन है।

रतन छलानी, अशोक चोरड़िया एवं देवेंद्र डागा ने प्रतियोगिता का संचालन किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी आदि पदाधिकारियों ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

सांत्वना पुरस्कार सुमन नाहटा, विनिता नाहटा, मोनिका संचेती, रेणु बाफना, मुदिता डाकलिया, आरती चोपड़ा ने प्राप्त किया। 'चित्र उकेरो कला बिखेरो' प्रतियोगिता में ए-ग्रुप में विधि नाहटा, बी-ग्रुप में प्रिया संचेती ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

चातुर्मास संपन्नता पर व्याख्यान

जोधपुर, जाटाबास।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने राजा परदेशी का व्याख्यान सुनाया। साध्वीश्री जी ने कहा कि राजा परदेशी घोर नास्तिक था, धर्म-कर्म, पुण्य-पाप, स्वर्ग-नरक, आत्मा-परमात्मा को नहीं मानता था। केशी श्रमण ने उन्हें दृढ़ धार्मिक बना दिया एवं हमेशा रमणीक रहने का संबोध दिया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि आप पहले सुंदर थे बाद में असुंदर मत बनना। धर्म की आराधना करते रहना, संयम तप की सुरभि फैलाते रहना, ज्ञान के दीप जलाते रहना, अपने जीवन को समुज्ज्वल, पवित्र बनाते रहना। आत्मा भिन्न है, शरीर भिन्न है, याद रखना। आपका संकल्प मजबूत रहे, श्रद्धा दृढ़ रहे, विश्वास अटल रहे।

तेरापंथ भवन से साध्वीवृंद ने प्रस्थान किया। श्रावक समाज अच्छी संख्या में साथ चल रहा था। सभा, तेयुप, तेमम ने जयनारों के राजमार्ग में सेवा का लाभ लिया। रैली भवन से रातनाड़ा सुरेंद्र कुचेरिया के निवास स्थान पर पहुँची, सुरेंद्र ने साध्वीवृंद तथा सभी आगंतुक भाई-बहनों का स्वागत किया।

महामांगलिक व निर्वाण कल्याणक

रायपुर।

तेरापंथ अमोलक भवन में समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी, समणी करुणाप्रज्ञा जी, समणी सुमनप्रज्ञा जी के सान्निध्य में अनुष्ठान व प्रवचन का आयोजन किया गया। आयोजन में समणीवृंद द्वारा सर्वप्रथम दीपावली को ध्यानार्थ करते हुए विशेष अनुष्ठान करवाया गया।

समणीवृंद ने शुभकामनाएँ देते हुए प्रेरणा पाथेय प्रदान किया। अंत में समणीवृंद द्वारा उपस्थित जनों को वृहद मंगलपाठ प्रदान किया।

सम्मान समारोह का आयोजन

सिकंदराबाद।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा द्वारा चातुर्मास में विभिन्न क्षेत्रों में सेवा देने वाले श्रावक कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया। साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने वक्तव्य दिया। साध्वी रश्मिप्रभा जी ने गीतिका व साध्वी कल्पयशा जी ने भी वक्तव्य दिया।

इसके अंतर्गत मिलाप से सह-संपादिका सरिता बैद, स्वतंत्र वार्ता से धीरेंद्र प्रताप का भी सम्मान किया गया। चिकित्सा सेवा में डॉ० संभव बोरा, डॉ० भावना जैन, डॉ० समता गांधी, डॉ० विकास बैद, विनय बैद, राजेश सिंघी का सम्मान किया गया। सबसे कठिन पैदल रास्ते की सेवा करने वाले प्रेमसुख बैंगाणी, संपतमल गोलछा, सुदीप नोलखा, प्रमोद भंडारी, आसकरण सेठिया, सुजीत कोठारी का भी सम्मान किया गया। रोज की गोचरी की सेवा में प्रकाश दफ्तरी का सम्मान हुआ।

विशेष सेवा में निर्मल बैंगाणी, राज कुमार गुजरानी, राजेश पटावरी, नीरज सुराणा का सम्मान किया गया। प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं सोशल मीडिया एवं तेरापंथ डिजिटल डायरेक्टरी में सेवा देने हेतु संजय कुचेरिया, अरिहंत गुजरानी, खुशाल भंसाली, मीनाक्षी सुराणा, राजेंद्र बोथरा, दीपेश बैंगाणी एवं लक्ष्मीपत बैद का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर सभा द्वारा तपस्या करने वाले तपस्वियों का भी सम्मान किया गया। महेंद्र लुणावत, मुन्नी देवी मालू, मानक देवी बेगवानी, कल्पना देवी बरमेचा एवं सुखराज देवी दुगड़ का सम्मान किया गया। जैन विद्या में वीरेंद्र घोषल, मनीष संचेती, दीपक सेठिया, कोमल सेठिया, मनीष सेठिया एवं हेमा लोढ़ा को भी सम्मानित किया गया।

सभाध्यक्ष बाबूलाल बैद ने चातुर्मास सफलता के साथ संपन्नता पर गुरुदेव व साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। अन्य संस्थाओं में महिला मंडल, तेयुप, टीपीएफ, अणुव्रत समिति के सभी अध्यक्षों व कार्यकर्ताओं को भी साधुवाद दिया। आभार ज्ञापन मंत्री सुशील संचेती ने किया। संचालन लक्ष्मीपत बैद ने किया।

नववर्ष के महामंत्रोच्चार में उमड़ा जन सैलाब

कांदिवली।

नववर्ष का अपना विशेष मूल्य है। व्यक्ति स्वयं को स्वस्थ और प्रसन्न बनाए रखने के लिए अपने आपको संकल्पों से भावित करे, ऐसी अपेक्षा है। अपेक्षित है किशोर और युवा पीढ़ी स्वयं को अधिक स्वस्थ एवं कार्यक्षमता बनाए रखने के लिए डिजिटल फास्टिंग का आंशिक प्रयोग अवश्य करें। यह उद्‌गार साध्वी निर्वाणश्री जी ने व्यक्त किए।

साध्वी योगक्षेमप्रभा जी ने विश्व शांति एवं आंतरिक ऊर्जा के जागरण हेतु सबसे विशेष आह्‌वान किया। उन्होंने आत्मरक्षा, मंगलभावना आदि के प्रयोग भी करवाए।

श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष विनोद बोहरा ने सबको नववर्ष की शुभकामनाएँ दी। साध्वी निर्वाणश्री जी एवं साध्वी योगक्षेमप्रभा जी ने भगवान महावीर के अंतिम चातुर्मास की विशेष रूप से अवगति दी। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया।

हिंदी, संस्कृत, प्राकृत आदि विविध भाषाओं में भगवान महावीर एवं गणधर गौतम से संबंधित प्रस्तुत गीतों का संगान किया गया।

नववर्ष महामांगलिक कार्यक्रम

कांटाबाजी।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में दीपावली अनुष्ठान एवं वीर निर्वाण २५४९वाँ नववर्ष पर महामांगलिक का आयोजन हुआ। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि मंत्र के साथ त्याग से हमारा मनोबल अधिक शक्तिशाली बनता है। अनेकों लोगों ने जैन विधि से दीपावली पूजन कर संयम, अहिंसा, सागदी को महत्त्व दिया। भगवान महावीर ने जीवन पर्यन्त अहिंसा समता का संदेश दिया। अपने कर्मों को क्षय कर कार्तिक कृष्णा अमावस्या को मोक्ष को प्राप्त किया।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि महावीर स्वामी ने आत्मदीप जलाया। मैत्री, क्षमा, अनेकांत, अपरिग्रह का संदेश दिया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष युवराज जैन, तेयुप के मंत्री गौरव जैन, तेमम की अध्यक्षा बॉबी जैन ने समाज को नववर्ष की शुभकामना दी।

नूतन वर्ष का बृहद मंगलपाठ

दक्षिण (मुंबई)।

शासनश्री साध्वी सोमलता जी व विविध क्षेत्रों के श्रावक-श्राविका समाज ने नववर्ष की प्रथम रश्मि का आरोग्य बोहिलाभ, मनोरथ सिद्धि का उपसर्गहर स्तोत्र, घंटाकर्ण मंत्र, पार्श्वनाथ मंत्रों व गौतम-प्रभु की स्तुति करके अभिनंदन किया।

शासनश्री साध्वी सोमलता जी ने कहा कि उत्सव उल्लास व उमंग के प्रतीक होते हैं। जीवन में नई ऊर्जा व नई प्रेरणा का संचार करते हैं।

साध्वीश्री जी ने कहा कि नया दिन हमेशा आता है। साल में एक दिन एक बार ही आता है बार-बार नहीं आता। इसलिए हर पल जागरूक रहकर अपने असली घर को पहचानोगे, तब उत्सव मनाने की सार्थकता होगी।

कैसे करें आध्यात्मिक लक्ष्मी की आराधना

माधावरम्।

तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट की आयोजना में तेरापंथ जैन पब्लिक स्कूल के प्रांगण में मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में धनतेरस के अवसर पर आध्यात्मिक अनुष्ठान के साथ 'कैसे करें आध्यात्मिक लक्ष्मी की आराधना' विषयक प्रवचन हुआ। मनिश्री ने कहा कि हमें धर्म की शरण लेनी चाहिए। धर्म हमारे जीवन का त्राण है, प्राण है, आधार है। जहाँ पर अहिंसा संयम, तप होता है, वहाँ धर्म होता है।

मुनिश्री ने कहा कि लक्ष्मी का वास वहीं होता है जहाँ स्वच्छता, प्रसन्नता का वास होता है। प्रसन्न व्यक्ति आनंद की अनुभूति कर सकता है। जहाँ गुरुजनों, बड़ों का आदर होता है, सुसंस्कृत, ऊँची भाषा बोली जाती है, जिस घर में संभवत अत्यधिक झगड़ा नहीं होता है, वहाँ लक्ष्मी का निवास रहता है।

मुनिश्री ने इस अवसर पर 'लब्धि संपन्न श्री गणधर गौतम स्वामी के दिव्य मंत्रों का अनुष्ठान' भी करवाया। कार्यक्रम संयोजक सुरेश रांका ने मुनिश्री, आराधकों, प्रायोजक सुकनराज हीरेंद्र कोठारी, मंगलापुरम परिवार, कार्यकर्ताओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापन दिया।

बाल दिवस पर कार्यक्रम

मध्य उत्तर कोलकाता।

मध्य उत्तर कोलकाता ज्ञानशाला ने बाल दिवस मनाया। नमस्कार महामंत्र से ज्ञानशाला आरंभ की गई।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में बच्चों द्वारा भगवान महावीर के उपदेशों को दर्शाते हुए नाटिका प्रस्तुत की गई। सभी बच्चों को ज्ञानशाला लोगो छपा हुआ मग तथा बच्चों की फोटो के साथ बच्चों की विशेषता बताते हुए टाइटल वाले कार्ड दिए गए और साथ ही बच्चों को गेम्स खिलाए गए।

कार्यक्रम में आंचलिक संयोजिका प्रेमलता चोरड़िया, सह-संयोजक संजय पारख, महालचंद भंसाली, मंजु घोड़ावत व प्रकाश दुगड़ ने अपने-अपने विचार रखे तथा बच्चों को नियमित ज्ञानशाला में आने की प्रेरणा दी।

सभा अध्यक्ष पारस सेठिया व सुभाष गुजरानी, प्रशिक्षिका उषा बैद, सुनीता संचेती, वीणा बैद, निधि कोचर एवं अभिभावक भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन प्रशिक्षिका वीणा बैद ने किया।

ज्ञानशाला सार-संभाल

उत्तरपाड़ा।

उत्तरपाड़ा ज्ञानशाला के परीक्षण हेतु ज्ञानशाला की आंचलिक संयोजिका एवं सह-संयोजक सहित ज्ञानशाला की एक पर्यवेक्षक टीम उत्तरपाड़ा पधारी। उत्तरपाड़ा सभा के अध्यक्ष नोरतनमल सेठिया और निवर्तमान अध्यक्ष दिलीप चोपड़ा और ज्ञानशाला प्रभारी निकेश सेठिया ने ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं के साथ उनका स्वागत किया, सभा अध्यक्ष और निवर्तमान अध्यक्ष ने अपने विचार व्यक्त किए।

ज्ञानशाला के आंचलिक सह-संयोजक और आंचलिक संयोजिका ने अपने विचार व्यक्त किए। ज्ञानशाला के विद्यार्थियों ने महावीर अष्टकम् द्वारा अपनी प्रस्तुति दी।

ज्ञानशाला के ज्ञानशाला आंचलिक समिति सदस्य मालचंद, आंचलिक संयोजिका प्रेमलता चोरड़िया, सह-संयोजक संजय, क्षेत्रीय संयोजक मंजु घोड़ावत उत्तरपाड़ा सभा की ज्ञानशाला की सार-संभाल हेतु पधारे। सभा द्वारा सम्मानित किया गया।

मुख्य प्रशिक्षिका मंजु कोठारी और प्रशिक्षिका सीमा गिड़िया ने ज्ञानशाला के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम में लगभग ४० सदस्यों की उपस्थिति रही।

तपस्या की गंगा

भिलोड़ा।

मुनि डॉ० मदन कुमार जी के सान्निध्य में महावीर भवन में तप अभिनंदन कार्यक्रम रखा गया। समारोह में मुनि मदन कुमार जी ने कहा कि भिलोड़ा उत्तर गुजरात का श्रद्धा का विशिष्ट क्षेत्र बन गया है। मात्र सात परिवारों में चातुर्मास होना एक विलक्षण घटना है। परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की अनुपम कृपा का फल है। मुनिश्री ने कहा कि तपस्या आत्म शोधन का मार्ग है। जन्म-जन्मांतर के संचित कर्म तप की आराधना से क्षीण हो जाते हैं। तपस्या का उद्देश्य मात्र निर्जरा और मोक्ष होना चाहिए।

प्रमिलादेवी पोखरना एवं प्रमिला देवी दक ने मासखमण-३१ दिन की तपस्या करके तपस्या के क्षेत्र में कीर्तिमान बनाया है तथा भारी मनोबल का परिचय दिया है। इन दोनों मेवाड़ी बहनों के वर्षीतप भी चल रहा है। माहेश्वरी परिवार की स्नेहलता मूंदड़ा ने ग्यारह और तेरह की तपस्या करके महान कार्य किया है।

मुनि मदन कुमार जी ने कहा कि तपस्या आत्मोदय का श्रेष्ठ आलंबन है तथा धर्मसंघ की प्रभावना का महत्त्वपूर्ण घटक है।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष महावीर चावत, मंत्री बाबूलाल दक, विकेश कुमार दक, तेमम की अध्यक्षा रेखा भटेवरा, मंत्री टीना चावत, दिलीप पोखरना, विकास पोखरना, श्रद्धा दुगड़, मंजु-चेतना पोखरना आदि ने तपस्वियों की प्रशंसा की। कार्यक्रम का संचालन मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने किया।

अहमदाबाद से समागत अदिती सेखानी ने मुनि मदन कुमार जी के दर्शन कर महिला मंडल एवं ज्ञानशाला का अवलोकन किया। अदिती सेखानी ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

सूरत से समागत प्रवीण मेड़तवाल, भावेश हिरण, राहुल खोखावत एवं विशाल माडका ने मुनि मदन कुमार जी के दर्शन कर ज्ञानशाला के बालक-बालिकाओं का कंठस्थ ज्ञान एवं संगीत प्रस्तुति का श्रवण किया। प्रवीण मेड़तवाल ने मुनि मदन कुमार जी के कर्तृत्व की सराहना की। तेरापंथी सभा ने सभी अतिथियों का साहित्य से सम्मान किया।

✦ *आदमी को भावशुद्धि रखने का प्रयास करना चाहिए। यही जीवन-विज्ञान की आत्मा है।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 नवंबर - 4 दिसंबर, 2022

✦ *जीवन में सदुपदेश का थोड़ा-सा अंश भी उतरना शुरू हो गया तो जीवन में सत् परिवर्तन आ सकता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

जैन संस्कार विधि के बढ़ते चरण

दक्षिणांचल स्तरीय जैन संस्कार विधि संस्कारक प्रशिक्षण एवं निर्माण कार्यशाला व सम्मेलन

विजयनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्त्वावधान में दक्षिणांचल स्तरीय जैन संस्कार विधि संस्कारक प्रशिक्षण एवं निर्माण कार्यशाला व सम्मेलन का द्विदिवसीय आयोजन तेयुप, विजयनगर द्वारा किया गया।

कार्यशाला व सम्मेलन के लिए ५७ सदस्यों ने रजिस्टर करवाया। ५२ सदस्यों ने कार्यशाला में सहभागिता दर्ज कराई। जिसमें दक्षिण के सुदूर क्षेत्रों से २० पुराने संस्कारक व ३२ संभागी संस्कारक बनने हेतु उपस्थित हुए।

कार्यशाला के प्रथम सत्र का शुभारंभ मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में नवकार महामंत्र जप से हुआ। तेयुप, विजयनगर की 'विजय स्वर संगम' द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन तेयुप पूर्व अध्यक्ष संपत चावत ने उपस्थित जनों को करवाया। तेयुप, विजयनगर के अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा ने स्वागत वक्तव्य दिया। तत्पश्चात मुनिश्री ने अपने मंगल उद्बोधन में जैन संस्कार विधि के बारे में विस्तार से बताया।

प्रथम एवं द्वितीय सत्र में मुख्य प्रशिक्षक डालिमचंद नवलखा ने जैन दर्शन, जैन सिद्धांत, जैन संस्कृति, जैन जीवनशैली एवं जैन संस्कार विधि से कार्यक्रम संपादित करने के बारे में बताया।

तृतीय व चतुर्थ सत्र में जैन संस्कार विधि राष्ट्रीय प्रभारी राकेश जैन ने जैन संस्कार विधि में करणीय व अकरणीय कार्य के बारे में बताते हुए मंगलभावना पत्रक के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कार्यशाला में उपस्थित संभागी बड़ी तन्मयता से विषय को सुनते, अंत में अपनी-अपनी जिज्ञासा रखते जिसका मुख्य प्रशिक्षक सटीक समाधान बताते।

कार्यशाला में उपस्थित सभी महानुभावों ने गुरु इंगित ७ से ८ के बीच शनिवारीय सामायिक की।

प्रथम दिन के रात्रिकालीन अंतिम सत्र में ग्रुप में उच्चारण शुद्धि का क्रम चला। जिसमें राष्ट्रीय सह-प्रभारी संजय भंडारी, संस्कारक राकेश दुधोड़िया, दिनेश मरोठी एवं विकास बांठिया ने ४ ग्रुप के माध्यम से संभागियों की उच्चारण शुद्धि करवाई।

कार्यशाला के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में मंचीय कार्यक्रम में अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप उपाध्यक्ष जयेश मेहता ने कार्यक्रम के शुरुआत की विधिवत घोषणा की, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में अभातेयुप अभूतपूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया पधारे। गरिमामय उपस्थिति अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत एवं प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरना की रही। विशेष उपस्थिति के रूप में विजयनगर सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी, जैन संस्कार विधि राष्ट्रीय प्रभारी राकेश जैन, राष्ट्रीय सह-प्रभारी संजय भंडारी एवं परिषद प्रभारी सोनू डागा उपस्थित रहे। सभी ने अपने वक्तव्य में विचार व्यक्त करते हुए शुभकामनाएँ संप्रेषित की। राष्ट्रीय सह-प्रभारी संजय भंडारी ने मंचीय कार्यक्रम का संचालन किया। आभार ज्ञापन सोनू डागा ने किया।

द्वितीय सत्र में जैन संस्कार विधि से विवाह संस्कार कैसे होता है, उसका डेमो मुख्य प्रशिक्षक डालिमचंद नवलखा ने दिखाया व विधि से संबंधित भ्राँतियों का समाधान भी किया गया।

दीक्षांत समारोह

दीक्षांत समारेह का आयोजन हुआ। कार्यक्रम सामूहिक नवकार महामंत्र के मंत्रोच्चार के साथ शुरू किया गया। दीक्षांत समारोह में राष्ट्रीय प्रभारी राकेश जैन ने सभी को नई नियमावली की विस्तृत जानकारी दी। अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत, संस्कारक राकेश दुधोड़िया ने अपने भाव रखे।

मुख्य प्रशिक्षक डालिमचंद नवलखा ने ली गई परीक्षा के अनुसार १७ नए संस्कारकों को 'धी' श्रेणी संस्कारक की उपाधि की अर्हता प्रदान की।

कार्यशाला की सारी व्यवस्था-संभागियों से बात करना, कन्फर्मेशन लेना, समय-समय पर रिमाइंडर करना, यातायात व आवास व्यवस्था आदि सारा कार्य तेयुप, विजयनगर की टीम द्वारा किया गया। कार्यशाला संयोजक व कर्नाटक राज्य सहयोगी विकास बांठिया, स्थानीय संयोजक धीरज भादानी व बसंत डागा ने कार्यशाला को सफल बनाने में अपना पूर्ण योगदान दिया। साथ ही तमिलनाडु के राज्य सहयोगी चेतन बरड़िया का अतुलनीय सहयोग मिला।

इस कार्यशाला के पश्चात देश भर में अभातेयुप मान्यता प्राप्त जैन संस्कारकों की संख्या ५०२ हो गई है।

तप अभिनंदन समारोह का आयोजन

शाहदरा, दिल्ली।

ओसवाल भवन, विवेक विहार में लाडनूं निवासी-दिल्ली प्रवासी तपस्विनी ममता धर्मपत्नी रवि पगारिया का तपोभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी के ६१ वर्ष के उपलक्ष्य में ६१ दिनों का आयंबिल तप अनुष्ठान करके अपनी प्रबल आत्मशक्ति का परिचय दिया है। जैन धर्म में कर्म क्षय के लिए तपस्या का उपक्रम सर्वश्रेष्ठ माना गया है। कोटि-कोटि जन्मों के संचित कर्म तपस्या के द्वारा क्षीण हो जाते हैं। मैं ममता के इस तप की पुनः-पुनः अनुमोदना करती हूँ। पूर्व में २ वर्षीतप व अनेक छोटे तप भी ममता के किए हुए हैं।

शासनश्री साध्वी सुव्रतांजी ने कहा कि हमारे चातुर्मास का शुभारंभ दो मासखमण एवं हनुमान सेठिया के ६१ दिनों की तपस्या के साथ हुआ। आज ममता की ६१ दिनों के आयंबिल तप से चातुर्मास परिसंपन्न हो रहा है। मैं इस तपस्या की भूरी-भूरी श्लाघा करती हूँ एवं आगे बढ़ने की मंगलकामना करती हूँ।

शासनश्री साध्वी सुमनप्रभा जी ने कहा कि आयंबिल की तपस्या स्वाद विजय की उत्कृष्ट साधना है। साध्वी कार्तिकप्रभा जी व साध्वी चिंतनप्रभा जी ने तपस्विनी बहन को गीत से बधाई दी।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेमम की बहनों के मंगलाचरण से हुआ। अनुमोदना के क्रम में दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, तेमम दिल्ली की मंत्री यशा बोथरा, तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष विकास बोथरा, शाहदरा सभा के अध्यक्ष पन्नालाल बैद, मंत्री आनंद बुच्चा, ज्योति पगारिया, तारादेवी बैंगाणी एवं बहनों, ओसवाल समाज के अध्यक्ष बाबूलाल दुगड़, लाडनूं परिषद, दिल्ली के राकेश नाहटा आदि ने गीतिका व वक्तव्य के माध्यम से अपने भाव रखे।

शाहदरा सभा द्वारा तपस्विनी बहन का मोमेंटो व साहित्य से सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन सभा सहमंत्री सुरेश सेठिया ने किया।

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(१०९)

याद तुम्हारी आती।
सूर्योदय के साथ नाथ! जब गुरु-वंदन को जाती।।

रूप तुम्हारा इन नयनों में सदा तैरता रहता
गूँज शब्द की कानों में निर्झर गीतों का बहता
नाम जीभ पर एक तुम्हारा तुलसी-तुलसी प्यारा
साँस-साँस में रहे देवते! केवल वास तुम्हारा
सोते-उठते खाते-पीते तुमको भूल न पाती।।

दिल के दरिये में जिस पल भावों का ज्वार उमड़ता
कौंध विचारों में उठती सावन घनघोर घुमड़ता
परिव्याप्त हो जाती तन पर एक अलक्षित जड़ता
मन के दर्पण पर जब-तब प्रतिबिंब तुम्हारा पड़ता
स्मृतियाँ जब अतीत की कोई नूतन रील दिखाती।।

आस्था के दीवट पर संकल्पों की जोत जलाऊँ
शब्द राग लय बिना तुम्हारे गीत अनवरत गाऊँ
बरसी अपरिमेय नयनों से जो करुणा की धारा
मिला सहज संपोषण उससे निर्मित जीवन सारा
नाम पता यदि भेज सको तो लिखती जाऊँ पाती।।

(११०)

की गुरुवर ने नई सोच से नई क्रांति की अगुआई।
सदी बीसवीं में प्रतिबिंबित श्री तुलसी की पुण्याई।
यशोगीत गा रही उसी के अब पछुआई पुरवाई।।

अधरों पर अभिधान एक छवि बसी एक ही आँखों में
जपते-जपते नाम स्वयं ही शक्ति उभरती पाँखों में
इधर-उधर जिस ओर निहारें दिखलाई देते तुलसी
विज्ञजनों की वार्ताओं के केंद्रबिंदु हैं श्री तुलसी
विश्वभारती के कण-कण में है तुलसी की तरुणाई।।

कदमों में थी इतनी ताकत थके नहीं चलते-चलते
आँधी-तूफानों की आफत बुझे नहीं जलते-जलते
हुए सहज साकार सपन जो भावजगत में थे पलते
बोल मधुर पा आश्वासन के पीड़ा के हिमगिरि गलते
अमियपगी नजरें टिकते ही खिल जाती थी अमराई।।

पथ के अनगिन पाषाणों को प्रतिमा का आकार दिया
खोल विविध आयाम प्रगति के नया सृजन-संसार दिया
भरी रवानी जनमानस में बढ़ने का अवकाश दिया
जीवन के हर चौराहे पर मंजिल का अहसास दिया
वर्तमान के कैनवास पर यह अतीत की परछाईं।।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(५३) यदा लोकमलोकं च, जिनो जानाति केवली।
आयुषोऽन्ते निरुन्धानः, योगान् कृत्वा रजः क्षयम्।।
(५४) अनन्तामचलां पुण्यां, सिद्धिं गच्छति नीरजाः।
तदा लोकमस्तकस्थः, सिद्धो भवति शाश्वतः।। (युग्मम्)

(पिछला शेष) जिन या केवली जब अपने स्थूल शरीर का त्याग करते हैं तब कुछ ही क्षणों में मन, वाणी व देह के योगों यानी प्रवृत्ति का निरोध कर मेरु पर्वत की भाँति अचल अवस्था को प्राप्त कर समस्त स्थूल-सूक्ष्म शरीरों से मुक्त होकर सिद्ध अवस्था को प्राप्त कर सिद्धत्व का वरण कर लेते हैं। आवागमन से मुक्त हो जाते हैं।

मुक्तात्मा—सिद्धत्व को प्राप्त आत्मा का अवस्थान लोक का अग्रभाग है। इससे आगे न गति है और न स्थिति है। आकाश के दो विभाग हैं—एक लोकाकाश और दूसरा अलोकाकाश। अलोक में आकाश के अतिरिक्त कोई द्रव्य नहीं हैं। लोक में ही गति, स्थिति, जीव और पुद्‌गल है। गति और स्थिति द्रव्य के अभाव में जीव और पुद्‌गलों का अलोकाकाश में अवस्थिति नहीं होती। लोकाकाश और अलोकाकाश की मर्यादा इन्हीं के कारण से होती है। सिद्ध शुद्धात्मा है। स्थूल आदि शरीरों के छूटने पर आत्मा एक समय में लोक के अग्रभाग में अवस्थित हो जाता है। यह आत्मा के पूर्ण मुक्त होने की अवस्था है। साधना की सिद्धि का यही अंतिम मुकाम है।

(५५) अभूवंश्च भविष्यन्ति, सुव्रता धर्मचारिणः।
एतान् गुणानुदाहुस्ते, साधकाय शिवंकरान्।।

जो सुव्रत और धार्मिक हुए हैं और होंगे, उन्होंने साधक के लिए कल्याण करने वाले इन्हीं गुणों का निरूपण किया है।

इति आचार्यमहाप्रज्ञविरचिते संबोधिप्रकरणे
मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसानामा नवमोऽध्यायः।

संयतचर्या

मेघः प्राह

(१) कथं चरेत् कथं तिष्ठेत्, शयीतासीत वा कथम्।
कथं भुञ्जीत भाषेत, साधको ब्रूहि मे प्रभो!

मेघ बोला—हे प्रभो! मुझे बताइए, साधक कैसे चले? कैसे ठहरे? कैसे सोए? कैसे बैठे? कैसे खाए? और कैसे बोले?

मेघकुमार ने यहाँ छह प्रश्न प्रस्तुत किए हैं। इन छहों प्रश्नों में साधक जीवन के सारे पहलु समा जाते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो इन प्रश्नों में सारा योग समा जाता है।

व्यक्ति जब साधक-जीवन में प्रवेश करता है तब उसका चलना, बैठना, खाना आदि विशेष लक्ष्य से संबंधित हो जाते हैं। अतः उसे उन सभी प्रवृत्तियों की कुशलता प्राप्त करने के लिए लंबे समय तक प्रशिक्षण लेना होता है। यहाँ से योग का प्रारंभ होता है।

गीता में भी अर्जुन श्रीकृष्ण से पूछते हैं—
स्थितप्रज्ञस्य का भाषा, समाधिस्थस्य केशव!
स्थितधीः किं प्रभाषेत, किमासीत व्रजेत् किम्।।
केशव! समाधि में स्थित स्थितप्रज्ञ की क्या परिभाषा है? वह कैसे बोले? कैसे बैठे? और कैसे चले? **(क्रमशः)**

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

धर्म बोध

शील धर्म

प्रश्न २३ : कई धार्मिक ग्रंथों में संतानोत्पत्ति के लिए मैथुन सेवन को उचित माना है। इसमें जैन दृष्टिकोण क्या है?

उत्तर : कई धार्मिक ग्रंथों व मनस्वी विचारकों ने संतानोत्पत्ति के लिए मैथुन सेवन को उचित माना है। महात्मा गांधी ने संतानोत्पत्ति या आध्यात्मिक प्रेम के होते स्वस्त्री से किए जाने वाले मैथुन सेवन को उचित ठहराया है। उन्होंने इसे पाप न मानकर ईश्वर की आज्ञा का पालन बताया है। महात्मा गांधी ने केवल कामाग्नि की तृप्ति के लिए किए जाने वाले संभोग को त्याज्य बताया है।

जैन दृष्टि में विषयतृप्ति और संतानोत्पत्ति, दोनों ही हेतु सावद्य हैं। संभोग क्रिया में फिर वह भले ही किसी भी हेतु से हो, इंद्रियों के विषयों का सेवन होता ही है। यह संभव है कि कोई संभोग तीव्र परिणामों से करे और कोई हल्के परिणामों से। जो तीव्र परिणामों से प्रवृत्त होता है, वह गाढ़ बंधन करता है और जो हल्के परिणामों से प्रवृत्त होता है, उसका बंधन हल्का होता है।

संतानोत्पत्ति में स्वधर्म पालन जैसी कोई बात नहीं। अपने पीछे अपना वारिस छोड़ जाने की भावना में मोह और अहंकार ही है। अनासक्तिपूर्वक संतानोत्पादन करने वाले ब्रह्मचारी ही हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता। वह भी भोगी है। यदि भावों में तीव्रता नहीं है, तो उसका बंधन कठोर नहीं होगा, इतनी सी बात है। हेतु से दोषपूर्ण क्रिया निर्दोष नहीं हो सकती। अशुद्ध साधन प्रयोजनवश शुद्ध नहीं हो सकता। **(क्रमशः)**

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

जयाचार्य के साहित्य का बहुत बड़ा भाग आचार्य भिक्षु के विचारों को गुम्फित करने में कृतार्थ हुआ है। आचार्य भिक्षु के प्रति वे सर्वात्मना समर्पित थे। उन्हें आचार्य भिक्षु का महान् भाष्यकार कहा जा सकता है। वे आचार्य भिक्षु के जीवन में इस तरह समा गए कि उनकी पहचान द्वितीय भिक्षु के रूप में होने लगी।

जयाचार्य महान् स्वाध्याय-प्रेमी थे। अनेक आगमों की हजारों गाथाएँ उन्हें कंठस्थ थीं। अंतिम कुछ वर्षों में वे अपना अधिकांश समय आगम-स्वाध्याय, ध्यान, आत्मचिंतन एवं साहित्य-सृजन में लगाते। आगमों का अवगाहन करते-करते उनकी मेधा इतनी प्रखर हो गई थी कि वे जिस किसी विषय को छूते, उसकी पुष्टि में आगम-प्रमाणों की लंबी शृंखला खड़ी कर देते।

जयाचार्य के विराट व्यक्तित्व में एक साथ कई क्षमताओं का विकास था। उन्होंने तीस वर्ष तक आचार्य के रूप में धर्मसंध की सेवा की। उन्होंने अपने शासनकाल में आचार्य भिक्षु की परंपरा को सजाया, संवारा, संवर्धित किया एवं संगठन को सुदृढ़ आधार दिया।

उनके शासनकाल में तीन सौ उनतीस दीक्षाएँ हुईं जिनमें एक सौ पाँच साधु एवं दो सौ चौबीस साध्वियाँ थीं। वि०सं० १९३८ भाद्रपद कृष्णा द्वादशी को जयपुर में उन्होंने पंडतमरण प्राप्त किया।

आचार्य मघवागणी

आचार्य मघवागणी तेरापंथ धर्मसंघ के पंचम आचार्य थे। उनका जन्म वि०सं० १८९७ चैत्र शुक्ला एकादशी को बीदासर के बेगवानी परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम पूरणमलजी तथा माता का नाम बन्नाजी था। उनका जन्म-नाम मघराज था। उनके एक छोटी बहिन थी, जिसका नाम था गुलाब। दोनों ही भाई-बहन रूप संपन्न एवं बुद्धि संपन्न थे। उन दिनों युवाचार्य जीतमलजी का चातुर्मास बीदासर में हुआ। माता बन्नाजी एवं दोनों भाई-बहनों के हृदय में वैराग्य के बीज अंकुरित हुए। तीनों एक साथ संयम-जीवन ग्रहण करने को समुत्सुक थे पर कुमारी गुलाब साध्वी बनने के लिए निर्धारित न्युनतम अवस्था तक नहीं पहुँची थी। इसलिए तीनों के एक साथ त्याग मार्ग पर बढ़ने में बाधा थी। पुत्री के लिए माँ ने अपनी भावना का संवरण किया। बालक मघराज का मन मुनि बनने के लिए उतावला हो रहा था। उन्हें इस कार्य में थोड़ा भी विलम्ब असह्य था। माँ की अनुमति प्राप्त कर युवाचार्य जीतमलजी के सामने उन्होंने अपनी भावना प्रस्तुत की और तत्त्वज्ञान सीखना शुरू कर दिया। जयाचार्य को बालक मघवा के व्यक्तित्व में अप्रतिम योग्यता का आभास हुआ।

वि०सं० १९०८ मृगसर कृष्णा द्वादशी के दिन बालक मघवा का भाग्योदय हुआ। लाडनूं में युवाचार्यश्री जीतमलजी के हाथ से उसका दीक्षा संस्कार संपन्न हुआ।

तेरापंथ के तृतीय आचार्य रायचंदजी उस समय मेवाड़ के रावलिया गाँव में विराज रहे थे। मुनि मघराज की दीक्षा के समाचार जब उनके पास पहुँचे, उस समय तीन छींके आईं। उन्हें शुभ माना गया। पहली छींक के समय उन्होंने कहा—'यह साधु होनहार होगा।' दूसरी छींक के समय कहा—'यह मुनि अग्रणी बनकर विचरेगा।' तीसरी बार छींक के समय उनके सहज शब्द निकले—'यह मुनि जीतमल का भार संभालने वाला होगा।'

महान् पुरुषों की वाणी असफल नहीं होती। मघवागणी के संबंध में ऋषि रायचंदजी द्वारा कहे गए शब्द सही प्रमाणित हुए। उन्होंने जयाचार्य का उत्तराधिकार संभाला।

मुनि मघराजजी ने जयाचार्य की सन्निधि में रहकर बहुमुखी विकास किया। नम्रता, सहनशीलता, गंभीरता, पापभीरूता आदि गुण उनमें स्वभावगत थे। गुरु के प्रति उनका समर्पण अद्‌भुत था तो गुरु का भी उनके प्रति उतना ही वात्सल्य था। गुरु-शिष्य की यह अभिन्नता वात्सल्य और समर्पण का एक आदर्श उदाहरण है। **(क्रमशः)**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 नवंबर - 4 दिसंबर, 2022

✦ *तर्क के द्वारा ज्ञान को वृद्धिंगत किया जा सकता है, इसलिए विद्वत्ता को बढ़ाने के लिए तर्कशक्ति का विकास आवश्यक है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

मंगलभावना समारोह के आयोजन

राजलसेदसर

चातुर्मास सानंद संपन्न कर साध्वी मंगलप्रभा जी एवं साध्वीवृंद ने गुरु निर्देशानुसार जयपुर की तरफ प्रस्थान किया। तेरापंथी सभा, महिला मंडल, कन्या मंडल, तेयुप के साथ-साथ किशोर मंडल एवं ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्ने ज्ञानार्थी सुबह से ही साध्वीश्री जी के मंगल विहार में साथ में जाने को तेरापंथ भवन पहुँच चुके थे। उपस्थित सभी जनों ने हृदय से खमतखामणा की। सभी ने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए साध्वीवृंद के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ व्यक्त की।

पूर्व रात्रि को तेरापंथ भवन में मंगलभावना समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंजुदेवी बाफना द्वारा मंगलाचरण से किया गया। इस अवसर पर साध्वी मंगलप्रभा जी ने कहा कि यहाँ के श्रावक श्रद्धा, सेवा, समर्पण के धनी हैं। देव, गुरु और धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा है। सहवर्ती साध्वियाँ—साध्वी सुमन कुमारी जी, साध्वी समप्रभा जी एवं साध्वी प्रणवप्रभा जी यहाँ धार्मिक वातावरण में अच्छा महसूस कर रही हैं। हर दृष्टि से यहाँ हमारा प्रवास सुखद रहा।

साध्वीश्री जी ने कहा कि हम साधुओं के लिए स्वागत और विदाई नहीं होते। संत और सरिता दोनों ही लोक-कल्याण के लिए यात्रायित रहते हैं। संतों का आगमन और निर्गमन दोनों ही मंगल होते हैं।

कार्यक्रम में साध्वी समप्रभा जी एवं साध्वी प्रणवप्रभा जी ने उद्‌गार व्यक्त किए। तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष राजकुमार विनायकिया, तेमम की अध्यक्षा प्रेम देवी विनायकिया, मंत्री सविता बच्छावत, कन्या मंडल, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका मोनिका बैद सहित अनेक जनों ने गीतिका, कविता, मुक्तक एवं वक्तव्य के माध्यम से मंगलभावना व्यक्त की। किशोर मंडल एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने शब्द चित्र के माध्यम से साध्वीवृंद के प्रति भावनाएँ प्रेषित की।

उपस्थित राजलदेसर तेरापंथ समाज ने सभी साध्वीवृंद से खमतखामणा की। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल संयोजिका कलिका चोपड़ा ने किया।

माधावरम्, चेन्नई

मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में चातुर्मासिक परिसंपन्नता के अवसर पर त्रिदिवसीय मंगलभावना समारोह का शुभारंभ हुआ।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि बहता हुआ पानी और रमता हुआ योगी पवित्र रहते हैं। विहार चर्या साधु के लिए कल्याणकारी है। माधावरम् का प्रवास सुखानुभूति से परिपूर्ण रहा। यहाँ के श्रावकों के परिवार की श्रद्धा प्रशंसनीय एवं अनुमोदनीय ही नहीं अनुकरणीय है। श्रावकों की विवेक चेतना जागृत है।

मुनिश्री ने कहा कि माधावरम् तो वह पावन भूमि है जहाँ आचार्यश्री महाश्रमण जी ने २०१८ का चातुर्मास कर ऊर्जा और पवित्रता से परिपूर्ण कर दिया था। चातुर्मासिक चतुर्दशी के अवसर पर हाजरी का वाचन किया गया। मुनि नरेश कुमार जी ने गीतिका का संगान किया।

मंगलभावना समारोह में अकलकंवर रांका, नीलम आच्छा, सुनीता डागा, डागा परिवार की बहुएँ, ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाएँ, जैन तेरापंथ नगर की बहनें, साहुकारपेट ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी विमल चिप्पड़, प्रकाशबाई संचेती ने मुनिश्री को चातुर्मास संपन्नता पर मंगलभावनाएँ संप्रेषित की। माधावरम् ट्रस्ट ने अनुदानदाता एवं कार्यकर्ताओं का सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन प्रवीण सुराणा ने किया।

विशाखापटनम्

तेरापंथ भवन में मुनि दीप कुमार जी, सहवर्ती संत बाल मुनि काव्य कुमार जी का मंगलभावना समारोह एवं मुनि दीप कुमार जी द्वारा लिखित पुस्तक 'प्रतिभा और पुरुषार्थ के संगम-मुनि राकेश' भेंट समारोह भी आयोजन तेरापंथी सभा द्वारा हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद जी०वी०एल० नरसिम्हा राव उपस्थित थे।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि मंगलभावना समारोह प्रमोद भावना का प्रतीक है। संतों के प्रति मंगलभावना कर रहे हैं। आप हमारे प्रति करते हैं और हम आपके प्रति। सबके प्रति मंगलभावना के फूल चढ़ाएँ। गुरुकृपा से विशाखापटनम् चातुर्मास करने आए और प्रस्थान का समय आ गया। विशाखापटनम् अच्छा क्षेत्र है। हम सौभाग्यशाली हैं ऐसा संघ और ऐसे गुरु मिले। हमारे गुरु आचार्यश्री महाश्रमण जी तो इस कलयुग में सतयुग के अवतार हैं।

मुनि काव्य कुमार जी का श्रम रहा। यहाँ की तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल, टीपीएफ सभाओं की सेवा मिली। सभा का मुख्य योगदान रहा। चंपालाल डूंगरवाल अध्यक्ष हैं, उन्होंने बहुत निष्ठा से दायित्व संभाला है।

मुनिश्री ने अनेकों श्रावक-श्राविकाओं का उल्लेख करते हुए झब्बरमल बुच्चा, हिम्मत भरत हीरावत, विनीत गोलछा सहित अनेक जनों की सेवाओं का उल्लेख किया

मुनिश्री ने स्वयं द्वारा लिखित पुस्तक के संदर्भ में कहा—'प्रतिभा और पुरुषार्थ के संगम-मुनि राकेश' बहुत प्रेरक है। शासन गौरव मुनि राकेश कुमार जी प्रतिभा और पुरुषार्थ के अद्‌भुत संगम थे। हमारे धर्मसंघ के विशिष्ट संत थे। गुरुओं के कृपा पात्र थे। तीन-तीन अलंकरण उन्हें प्राप्त हुए। वे साहित्यकार थे एवं एक कुशल वक्ता थे। मुनिश्री के सान्निध्य में रहने का १३ वर्ष अवसर मिला। मुनिश्री मेरे परम उपकारी हैं। यह ग्रंथ गुरु कृपा से आया है। पुस्तक के कार्य में निर्मल बैंगाणी का समय और श्रम लगा।

ऋषभ सुराणा का श्रम रहा। मुख्य अतिथि जीवीएल नरसिम्हा राव ने कहा कि ग्रंथ का प्रकाश अभिनंदनीय है। ऐसे संतों का जीवन संदेश होता है। मुझे मुनि दीप कुमार जी के दूसरी बार दर्शन का सौभाग्य मिला है। बाल मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि गुरु कृपा से प्रथम बार अठाई करने का अवसर मुझे यहाँ मिला। अच्छा ज्ञान-ध्यान हुआ।

कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष चंपालाल डूंगरवाल, तेयुप अध्यक्ष राजेश सुराणा, तेमम अध्यक्षा वंदना विनायकिया, टीपीएफ अध्यक्षा प्रेक्षा नाहटा, अभातेयुप सदस्य ऋषभ सुराणा सहित अनेक पदाधिकारी एवं सदस्यों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण और गीत का संगान किया। संचालन निशा कुंडलिया ने किया।

कांकरोली

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा की ओर से साध्वीवृंद के चातुर्मास की सानंद संपन्नता के उपलक्ष्य में मंगलभावना समारोह का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में कांकरोली नगर के उपनगर के भाई-बहन एवं कांकरोली के आसपास के गाँवों से धोइंदा, बोरज, बिनोल, कुंवारिया, भाणा आदि से भी अच्छी संख्या में उपस्थित थे।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र के संगान से हुआ। साध्वीश्री जी ने सामूहिक रूप से पार्श्वनाथ स्तुति की संगान किया।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रकाशचंद सोनी ने साध्वीश्री जी के संयम साधना एवं आगामी यात्रा के प्रति मंगलकामना की। चातुर्मास में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी दी। साध्वीवृंद से एवं पूरे समाज से क्षमायाचना की।

साध्वीश्री जी ने कहा कि जब चातुर्मास का समय आता है तो हर जन के मन में एक नया उत्साह, नई जागृति, नई ऊर्जा का संचार होता है। इसके भीतर अध्यात्म की भावना जगती है। गुरु के निर्देशानुसार कांकरोली आए और प्रज्ञा विहार के बाहर जितने उपनगर हैं, उनमें विचरण किया, प्रायः सभी घरों को यथासंभव संभाला, पारिवारिक सेवा द्वारा प्रत्येक भाई-बहनों से संपर्क किया। यथासंभव आध्यात्मिक प्रेरणा दी। चातुर्मास काल के प्रवास में पूरे श्रावक-श्राविका समाज ने प्रवचन, कार्यक्रम, प्रतियोगिताएँ, जप का क्रम आदि सभी आध्यात्मिक प्रवृत्तियों में सभी भाई-बहनों, कन्याओं, युवा साथियों, किशोरों, ज्ञानशाला के बच्चों आदि सभी ने भाग लिया।

साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि संत चरण गंगा की धारा होते हैं। उनकी सत्संग में आने से पापी चेतना भी धर्मी बन जाती है। चातुर्मास प्रवास में यहाँ का तेरापंथ समाज चाहे वह तेरापंथ सभा के अध्यक्ष आदि हों, महिला मंडल की अध्यक्षा, तेयुप की टीम हो, कन्या मंडल, किशोर मंडल, टीपीएफ आदि कोई भी संस्था हो सभी में बहुत अच्छी सौहार्द भावना, सामंजस्य व समन्वय है, जिससे हर कार्यक्रम में सभी ने एक-दूसरे का पूरा सहयोग दिया। साध्वीश्री जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। किसी प्रकार की कोई कमी रही हो तो इसके लिए अंत में चारों साध्वियों की ओर से क्षमायाचना की।

साध्वी चिन्मयप्रभा जी ने अपनी जन्मभूमि पर पहली बार प्रवास करने एवं अध्यात्म से भरे हुए कांकरोली के हर सदस्य की आध्यात्मिक भावना की प्रशंसा करते हुए सबको संघनिष्ठा, गुरुनिष्ठा, धर्मनिष्ठा और आत्मनिष्ठा को और मजबूत बनाने की प्रेरणा दी और सभी से क्षमायाचना की।

इस समारोह के अवसर पर तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष हिम्मत कोठारी, चंदप्रकाश चोरड़िया, महिला मंडल की अध्यक्षा इंद्रा पगारिया, मंत्री मनीषा कच्छारा, तेयुप अध्यक्ष निखिल कच्छारा सहित अनेक पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति गीत, कविता, भाषण के माध्यम से दी। चोरड़िया परिवार, ज्ञानशाला के बच्चों ने कन्या मंडल, महिला मंडल, टीपीएफ आदि ने समूह रूप से रोचक प्रस्तुतियाँ दी। सभी ने अंत में किसी भी प्रकार की जाने-अनजाने में हुई अविनय अशातना के लिए क्षमायाचना की।

कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री विनोद चोरड़िया ने किया।

कोयंबटूर

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी के सान्निध्य में मंगलभावना समारोह आयोजित किया गया। साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी द्वारा नमस्कार मंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। महिला मंडल की बहनों ने गीतिका प्रस्तुत की। ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्ने ज्ञानार्थियों ने विदाई गीतिका की प्रस्तुति दी। कन्या मंडल की प्रभारी ममता पुगलिया व कन्या मंडल की बेटियों ने वार्तालाप दृश्य के माध्यम से प्रेरक संदेश संवाद व गीतिका प्रस्तुत की।

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने कहा कि श्रद्धा-निष्ठा रूपी खरा मोती हर व्यक्ति के पास है उसका मूल्यांकन करना चाहिए। साध्वी अनुप्रेक्षाश्री, साध्वी प्रबोधयशा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी सन्मतिप्रभा जी और साध्वी धैर्यप्रभा जी की उपस्थिति रही।

मंगलभावना समारोह में सभा-संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित रहे। वरिष्ठ श्रावक उपासक शांतिलाल बोहरा, स्थानीय सभा के अध्यक्ष उत्तमचंद पुगलिया, महासभा सदस्य व स्थानीय मंत्री अजय बुच्चा, तेयुप अध्यक्ष मनोज बाफना, धर्मीचंद बोथरा, कुलदीप बोहरा, जैन सुख बैद, ओजस बुच्चा, महिला मंडल मंत्री आरती रांका आदि अनेक गणमान्यजनों ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संयोजन महिला मंडल की सहमंत्री कनक बुच्चा ने किया।

संस्कारों की प्रयोगशाला ज्ञानशाला

राजलदेसर।

साध्वी मंगलप्रभा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला का वार्षिक उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अर्जुन विनायकिया के द्वारा मंगलाचरण की सुमधुर प्रस्तुति से हुआ। बच्चों ने कंठस्थ ज्ञान पर आधारित 'ज्ञानशाला में एक दिन' नाटक की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं हेमलता घोषल, निर्मला जैन एवं मोनिका बैद ने सहभागिता की।

प्रशिक्षिका हेमलता घोषल ने ज्ञानशाला की वार्षिक रिपोर्ट का वाचन किया। साध्वी मंगलप्रभा जी ने कहा कि बच्चे तो गीली मिट्टी की तरह हैं, जिस साँचे में ढालो ढल जाते हैं। उन्होंने कहा कि सभा को भी ज्ञानशाला की सार-संभाल कभी-कभी स्वयं उपस्थित रहकर करनी चाहिए।

साध्वी प्रणवप्रभा जी ने बताया कि बच्चों को यदि खेल-खेल में मनोरंजन के साथ सिखाया जाए तो वे कठिन से कठिन पाठ भी जल्दी याद कर लेते हैं। जगत सिंह बेगवानी ने अपने विचार रखते हुए बच्चों को प्रेरणा प्रदान की।

कार्यक्रम के पश्चात ज्ञानशाला के सभी बच्चों को तेरापंथी सभा के द्वारा मोमेंटो भेंट कर सम्मानित किया गया। विद्यार्थी ऋषभ बैद व यश्वी बच्छावत को गुड अटेंडेंस व श्रेष्ठ ज्ञानार्थी के रूप में पुरस्कृत किया गया।

पूर्व रात्रि को ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा 'गुरुदेव तुलसी का परिचय' प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने नाटिका का मंचन किया एवं कव्वाली की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के बच्चों, तेरापंथी सभा, महिला मंडल, कन्या मंडल एवं किशोर मंडल सहित श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

संतों का मिलन सबके लिए प्रेरणास्रोत

ब्यावर।

मुनि सुमति कुमार जी व मुनि चैतन्य कुमार जी का अत्यंत सौहार्द एवं प्रसन्न वातावरण में मिलन हुआ। मुनि अमन कुमार जी ने अपने सहयोगी मुनि सुबोध कुमार जी के साथ संतों की अगवानी करने बाँके बिहारी मंदिर सूरजपोल गेट तक पहुँच समागत मुनि सुमति कुमार जी, मुनि देवार्य कुमार जी एवं मुनि राहुल कुमार जी का स्वागत-अभिनंदन किया।

मार्ग में रांकाजी की बगीची में अनेक भाई-बहनों ने भी मुनिप्रवर का स्वागत किया। रात्रि में स्वागत समारोह मूथा भवन में आयोजित हुआ।

इस अवसर पर मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा कि संतों का सौहार्दपूर्ण मिलन जनमानस के लिए प्रेरणास्रोत होता है। वह क्षेत्र भी सौभाग्यशाली होता है, जिन्हें ऐसे संतों के मिलन का अवसर प्राप्त होता है। संत गंगा की धारा के समान निरंतर प्रवाहमान होते हैं।

मुनि सुमति कुमार जी ने कहा कि जीवन में सबसे अच्छा प्रकाश होता है आँखों का। अगर आँख की ज्योति अच्छी है तो दूसरे सारे प्रकाश काम के हैं अन्यथा सूरज, चंद्रमा, लाइट, दीपक आदि के प्रकाश कोई काम का नहीं है। अंतरज्योति प्राप्त होती है गुरुओं से, संतों से। संत मिलन होता है तो श्रावक समाज में जागृति पैदा होती है।

इस अवसर पर मुनि देवार्य कुमार जी, मुनि सुबोध कुमार जी ने अपने भाव व्यक्त किए। समणी विनीतप्रज्ञा जी व समणी जगतप्रज्ञा जी के आगमन से उनके साथ भी संतों का मिलना हो सका।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा अध्यक्ष नोरतमल दुगड़, रिद्धकरण श्रीश्रीमाल, इंदू भटेवरा द्वारा स्वागत-अभिनंदन करते हुए आभार व्यक्त किया। रोहित मूथा, मनीष रांका, सुनील सेठिया, रमेश श्रीश्रीमाल, गौतम गोखरू सहित अनेक गणमान्यजन एवं महिला मंडल की सदस्याएँ उपस्थित थीं।

सम्मान समारोह का आयोजन

बैंगलुरु।

तेरापंथ सभा भवन, गांधीनगर के प्रांगण में मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में अणुविभा के तत्त्वावधान में आयोजित 'प्रबोधक प्रतियोगिता' के उत्तीर्ण अंक प्राप्त प्रतिभागियों का सम्मान समारोह अणुव्रत समिति, बैंगलुरु द्वारा आयोजित किया गया।

समिति अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल ने सभी का स्वागत किया। २०२१ एवं २०२२ प्रबोधक प्रतियोगिता के कुल ४०० अंक में से जिन प्रतिभागियों ने ३६० से अधिक अंक प्राप्त किया उनका सम्मान किया गया। उपस्थित १५० प्रतिभागियों का सम्मान हुआ।

मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि नाम के पीछे नहीं भागना है। काम के पीछे भागोगे, तो नाम अपने आप हो जाएगा। मुनि भरत कुमार जी एवं मुनि जयदीप कुमार जी ने सभी लाभार्थियों को हर वर्ष इस भाँति प्रतियोगिता में सहभागिता करने हेतु प्रोत्साहन दिया। नव मनोनीत राष्ट्रीय दक्षिण संगठन मंत्री राजेश चावत का समिति द्वारा सम्मान किया गया।

इस अवसर पर समिति उपाध्यक्ष देवराज रायसोनी, सहमंत्री धर्मेंद्र बरलोटा, कोषाध्यक्ष हरकचंद ओस्तवाल, कर्नाटक जीवन विज्ञान प्रभारी ललित आच्छा, सभा अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़ सहित अनेक पदाधिकारी एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मंत्री माणकचंद संचेती ने किया व आभार ज्ञापन संगठन मंत्री निर्मल पोखरणा ने किया।

ज्ञान पंचमी पर सरस्वती अनुष्ठान

मंडिया।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन में ज्ञान पंचमी कार्यक्रम रखा गया।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने ज्ञान पंचमी की महिमा बताते हुए कहा कि पठन और पाठन में श्रावक-श्राविका वर्ग बहुत पीछे है। इस धारा को तोड़ना होगा, ज्ञान के क्षेत्र में अपना पुरुषार्थ करना होगा।

पहले का समय था जहाँ हर घर पर पाठशाला होती थी और एक आज का समय है जो संघ की पाठशाला में भी अपनी संतानों को भेजते ही नहीं हैं। माता-पिता को जागरूक होना होगा। ज्ञान पंचमी के पवित्र दिन निर्णय करना है कि नित्य हम नया ज्ञान प्राप्त करेंगे। ज्ञान जीवन में नम्रता लाता है। ज्ञान प्राप्ति हेतु १० वस्तु आवश्यक हैं—निरोगी शरीर, बुद्धि, विनय, उत्साह, शास्त्रों के प्रति प्रेम, गुरु का सान्निध्य, पुस्तक, स्थल, स्वाध्याय, संतुलित भोजन।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि ज्ञान के अभाव में मनुष्य नेत्रवान होते हुए भी अंधा, मानव होते हुए भी पशु समान है। लौकिक, पारलौकिक संपति का मूल ज्ञानी है।

साध्वी मेरूप्रभा जी ने साध्वी दक्षप्रभा जी ने सरस्वती स्तुति प्रस्तुत की। उपस्थित सभी श्रावक-श्राविकाओं ने साधना करने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष नरेंद्र दक ने विचार व्यक्त किए। मंत्री महावीर भंसाली, महिला मंडल अध्यक्षा पुष्पा बाफना, मंत्री पूनम बोहरा, तेयुप अध्यक्ष प्रवीण दक, प्रमोद भंसाली, राकेश भंसाली, नेमीचंद सेठिया, मांगीलाल बुरड़ आदि अनेक श्रावक-श्राविका उपस्थित थे।

कौन बनेगा प्रज्ञावान प्रतियोगिता का आयोजन

गंगाशहर।

मुनि शांति कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा 'कौन बनेगा प्रज्ञावान' सर्वश्रेष्ठ प्रज्ञावान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। तेयुप, गंगाशहर के निर्देशन में किशोर मंडल द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता का केबीसी के तर्ज पर संचालन किया।

तेयुप सहमंत्री ऋषभ लालाणी ने बताया कि इस प्रतियोगिता के सेमीफाइनल राउंड में चातुर्मास काल के दौरान प्रति सप्ताह होने वाली 'मैं भी बनूँ प्रतिभावान' के सभी प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी एवं तेरापंथ प्रबोध प्रतियोगिता के फाइनलिस्ट प्रतिभागियों ने भाग लिया।

जैन तत्त्व प्रश्नोत्तरी व पच्चीस बोल पर आधारित इस प्रतियोगिता में टॉप ८० फाइनल राउंड में पहुँचे। इस प्रतियोगिता में विनीता नाहटा प्रथम स्थान प्राप्त कर विजयी बनी।

प्रतियोगिता का संचालन देवेंद्र डागा एवं मोनिका संचेती द्वारा किया गया और सहयोगी के रूप में रोहित बैद रहे। अंतिम निर्णय तेयुप अध्यक्ष अरुण नाहटा एवं मंत्री भरत गोलछा का रहा। प्रतियोगिता के संचालन में ब्लू ब्रिगेड सदस्य कुलदीप छाजेड़ एवं किशोर मंडल संयोजक दीपेश बैद व तेयुप और किशोर मंडल के सदस्यों का सक्रिय योगदान रहा।

जीवन विज्ञान ट्रेनिंग कार्यशाला

खपोली (रायगढ़)।

अणुव्रत समिति, मुंबई के तत्त्वावधान में श्रीराज एजुकेशन सेंटर खपोली, रायगढ़ में जीवन-विज्ञान ट्रेनिंग कार्यशाला का आयोजन प्रार्थना सभा में योग जीवन-विज्ञान पाँचवीं से आठवीं क्लास तक के ७० बच्चों एवं १० क्लास टीचर ने भाग लिया।

प्रार्थना सभा में जीवन-विज्ञान के अंतर्गत सभी क्रियाएँ वैज्ञानिक रूप से समझाकर करवाई गई।

जीवन-विज्ञान प्रशिक्षक भारती आचार्य ने शरीर, श्वास, मन, भाव, प्राण, कर्म और चेतना का उल्लेख किया। मुद्रा, आसन, प्राणायाम, ध्वनि का निरंतर प्रयोग करके कैसे विकास किया जा सकता है, बताया। विनोद राठौड़ ने सभी प्रयोग करवाए।

खपोली से अणुव्रत समिति के विकास राठौड़ पधारे। विद्यार्थी एवं शिक्षकों ने अपने अनुभव बताए। प्रिंसिपल जोशी, कोर्डिनेटर राजूभाई हिमानी, निकिता खनगाड़े ने अपने विचार व्यक्त किए।

महिला मंडल के विविध आयोजन

द पॉवर ऑफ पॉजिटिविटी कार्यशाला

उधना।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम, उधना द्वारा साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में नारी लोक द्वारा निर्देशित 'द पावर ऑफ पॉजिटिविटी' कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी लब्धिश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र एवं तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से किया गया।

साध्वी जिज्ञासाप्रभा जी ने कहानी के माध्यम से बताया कि कैसे सकारात्मक सोच से हमारी भाव धारा निर्मल बन सकती है।

साध्वी लब्धिश्री जी ने कहा कि सत्संग, सतगुरु, सत्-साहित्य इनका सहयोग होने से हमारी भाव धारा निर्मल बनेगी एवं पॉजिटिविटी संपूर्ण व्यक्ति को प्रभावित करती है तथा पॉजिटिविटी से मन-मस्तिष्क शांत रहता है।

कार्यक्रम में अध्यक्षा जशु बाफना, उपाध्यक्षा महिमा चोरड़िया, पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी बहनों की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन कार्यकारिणी सदस्या रेखा चपलोत ने किया। आभार मंत्री सुनीता चोरड़िया ने किया।

आध्यात्मिक अनुष्ठान

अमराईवाडी।

अभातेमम के निर्देशन में तेमम द्वारा शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में दीपावली पावन पर्व पर भगवान महावीर की आराधना करते हुए आध्यात्मिक अनुष्ठान किया गया।

नमस्कार महामंत्र के द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत हुई। महिला मंडल की बहनों ने महावीर अष्टकम् का संगान किया।

साध्वी तरुणप्रभा जी ने अनुष्ठान संपादित करवाया।

अध्यक्ष संगीता सिंघवी ने स्वागत वक्तव्य दिया एवं आभार ज्ञापन मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने किया। सभा अध्यक्ष, मंत्री सहित संपूर्ण श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही।

शृंखलाबद्ध मौन अनुष्ठान का आयोजन

बालोतरा।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम के तत्त्वावधान में मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी के १०६वें जन्मदिन पर शृंखलाबद्ध मौन अनुष्ठान का आयोजन किया गया। मुनि मोहजीत कुमार जी ने मौन की महत्ता पर प्रकाश डाला और कहा कि मौन से क्रोध, व कषायों का नाश होता है।

मौन मानसिक स्पष्टता को बढ़ाता है। अपने और दूसरों के लिए करुणा पैदा करता है। मौन से व्यक्ति में एकाग्रता बढ़ती है, जिससे व्यक्ति की निर्णयात्मक क्षमता बढ़ती है। मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि मुनि भव्य कुमार जी और मुनि जयेश कुमार जी की विशेष प्रेरणा से ६१ भाई-बहनों व कन्याओं ने २४ घंटे लगातार मौन तप करके अपने कर्मों की निर्जरा की। अध्यक्षा निर्मला देवी संकलेचा ने सभी मौन व्रतधारियों का आभार व्यक्त किया।

✦ *बाल पीढ़ी को लौकिक विद्या के साथ अलौकिक विद्या (आध्यात्मिक विद्या) का भी शिक्षण और प्रशिक्षण मिलना चाहिए।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

टीपीएफ के विविध आयोजन

टीपीएफ का शपथ ग्रहण समारोह

दिल्ली।

साध्वी डॉ० शुभप्रभा जी के सान्निध्य में टीपीएफ, दिल्ली का शपथ ग्रहण समारोह पीएचडी चैम्बर ऑफ कॉमर्स में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलपाठ से हुई। टीपीएफ के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि रजनीश कुमार जी ने कहा कि यह कर्तव्यबोध भी है। समाज को टीपीएफ के माध्यम से जोड़कर संघ और संस्था का भी मान बढ़ाएँ। प्रोफेशनल आपस में मिलें-जुलें और अपने पेशेवर कौशल को समाज की बेहतरी के लिए उपयोग करें।

महिला मंडल ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर अध्यक्ष राजेश कुमार जैन ने अपने पदाधिकारियों की और कार्यकारिणी की घोषणा की।

समाजसेवी कन्हैयालाल पटावरी ने कोर कमेटी और कार्यकारिणी के सदस्यों को शपथ दिलाई।

टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने इस अवसर पर सदस्यता अभियान के कार्यक्रम को प्रमुखता देते हुए ७००० से १३००० मेंबर बनाए जाने का लक्ष्य रखा और मेंबरशिप लोगो लॉन्च किया।

टीपीएफ, दिल्ली के अध्यक्ष राजेश कुमार जैन ने भारत सरकार की अल्पसंख्यक मंत्रालय द्वारा दी जा रही सुविधाओं को जरूरतमंद जैन परिवारों तक पहुँचाने का प्रयास करने का निर्णय लिया, साथ ही मेडिकल कैंप्स के माध्यम से निर्धन परिवारों को निःशुल्क सुविधाएँ पहुँचाने का संकल्प लिया।

कन्हैयालाल पटावरी ने समाज के जरूरतमंद बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने में तथा आईएएस की पढ़ाई के लिए हॉस्टल सहित अन्य सुविधाएँ देने की घोषणा की। उन्होंने बताया कि ज्ञान को अपने ऊपर हावी न होने दें वरन समाज के उत्थान के लिए उपयोग करें।

टीपीएफ नॉर्थ जोन के प्रेसिडेंट विजय नाहटा ने टीपीएफ, दिल्ली टीम को शुभकामनाएँ दीं और पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर एक्सपोर्ट प्रमोशन कौंसिल फॉर हैंडी क्राफ्ट्स के अध्यक्ष राजकुमार मल्होत्रा ने व्यापार और स्किल डेवलपमेंट के अवसर पर हर संभव सहयोग उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर साध्वी डॉ० शुभप्रभा जी ने टीपीएफ के सभी सदस्यों को आशीर्वचन देते हुए टीपीएफ को टर्निंग पॉइंट ऑफ फ्यूचर का महत्त्व समझाया। साध्वी डॉ० शुभप्रभा जी ने कहा कि संघ और टीपीएफ से जुड़कर युवा संस्कारी और बुद्धि संपन्न बने। साध्वीश्री ने कहा कि आप कितनी भी ऊँचाइयाँ छू लें, लेकिन पाँव जमीन से जुड़े हुए होने चाहिए और संघ की सेवा के लिए तत्पर रहना चाहिए। उन्होंने किसी भी कार्य में सफलता के लिए नए संक्षेपण SEED (Spirituality - Effort - Efficiency - Dedication) का मंत्र दिया।

रूमा देवी ने नेटवर्क कनेक्ट कार्यक्रम के अंतर्गत अपना परिचय दिया और Femina को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर माई स्पोर्ट्स डॉट कॉम के सौरभ बनर्जी ने खेलों के लिए बनाए गए सॉफ्टवेयर के बारे में उपस्थित सभा को जानकारी दी। तेरापंथ, दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, महिला मंडल की अध्यक्ष मंजु जैन, तेयुप के मंत्री अभिनंदन बैद, जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष जोधराज बैद, पीएच-डी ऑफ कॉमर्स के उपाध्यक्ष हेमंत जैन पटावरी ने टीपीएफ को शुभकामनाएँ प्रेषित की और हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया।

पुखराज सेठिया, कमल सेठिया, भरत बेगवानी, स्वीटी जैन, रश्मि सिंघी, ओम डागा, मिलापचंद जैन, शांतिलाल पटावरी, प्रदीप संचेती, नोएडा टीपीएफ अध्यक्ष प्रसन्न सुराणा, फरीदाबाद अध्यक्ष राकेश सेठिया और गुड़गाँव अध्यक्ष विनोद बाफना, नंदलाल जैन, जीतो के विक्रम जैन, हर्ष सुराणा, अंकित जैन (पारस चैनल), राजेश जैन (आदिनाथ चैनल) भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। श्रेणिक जैन और प्रियंका जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया।

अंत में टीपीएफ, दिल्ली की सचिव कविता बरड़िया ने सभी साध्वीवृंद और उपस्थित जनों का आभार प्रकट किया।

नई टीम अतीत के फैसलों और कार्यों से प्रेरणा लें

उदयपुर।

शहर के महावीर स्वाध्याय-साधना केंद्र में टीपीएफ के उदयपुर चैप्टर के नव मनोनीत अध्यक्ष हिमांशु राय नागौरी का शासनश्री मुनि सुरेश कुमार जी के सान्निध्य में शपथ ग्रहण समारोह संपन्न हुआ।

डॉ० ज्योति नाहर द्वारा थीम सॉन्ग से शुरू हुए समारोह को संबोधित करते हुए मुनि संबोध कुमार जी 'मेधांश' ने कहा कि धरातल पर काम करने वाले समय खर्च नहीं निवेश करते हैं, टीपीएफ अब फ्यूचर फ्रेमिंग की और सार्थक कदम रखें। नई टीम अतीत के फैसलों और कार्यों से प्रेरणा लें और सुनहरे कल के लिए साथ चलें। मुनिश्री ने विजेता होने के लिए ५ पी फेक्टर दिया।

टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने कहा कि शपथ ग्रहण के साथ कर्तृत्व की कहानी शुरू हो जाती है। उन्होंने 'शाइन' तर्ज पर टीपीएफ कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए कहा कि हमें सदा याद रखना है कि हम नेटवर्किंग के बिना एक कदम भी किसी दिशा में आगे नहीं बढ़ सकते हैं।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नवीन चोरड़िया ने कहा कि हमें पहचान मिली है धर्मसंघ से। हम धर्मसंघ को कुछ लौटाने का मन रखें। उन्होंने कहा कि टीपीएफ की नींव उदयपुर में रखी गई थी।

राष्ट्रीय महासचिव विमल शाह ने नवनिर्वाचित कार्यसमिति को बधाई देते हुए शिक्षा संबल परियोजना 'इच वन टीच वन' की जानकारी दी।

मुख्य न्यासी चंद्रेश बाफना ने कहा कि टीपीएफ का दायित्व है कि तेरापंथ धर्मसंघ में जितने भी कार्य हों उन्हें संपोषण देना।

नव मनोनीत अध्यक्ष हिमांशु राय नागौरी ने कहा कि जिम्मेदारियाँ नई हैं, प्लेजर और पेशेन्स के साथ करें, तभी इतिहास रच सकेंगे। आचार्य महाप्रज्ञ का प्रोफेशनल्स को अध्यात्म से जोड़ने की कल्पना साकार हो, यही हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित लाइफ कोच संपति दुगड़ ने एनजीओ को प्रबंधित कैसे करें, विषय पर कहा कि एनजीओ समर्पण, समय और सही निर्णय से सफल होते हैं। टीपीएफ स्टार डोनर अजय मुरड़िया ने अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की।

मुख्य वक्ता के तौर पर अनुष्का अकादमी निदेशक एस०एस० सुराणा ने कहा कि टीपीएफ समाज का शुभ भविष्य है। राष्ट्रीय सदस्यता अभियान संयोजक राकेश सुतरिया, राष्ट्रीय सदस्य कपिल इंटोदिया ने भी विचार व्यक्त किए।

स्वागत राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष एवं निवर्तमान उदयपुर अध्यक्ष सी०ए० मुकेश बोहरा व आभार नवनिर्वाचित मंत्री पवन हिरण ने किया। मंच संचालन डॉ० ज्योति नाहर, डॉ० स्नेहा बाबेल ने किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने वर्ष-२०२२-२३ हेतु मनोनीत टीपीएफ अध्यक्ष हिमांशु राय नागौरी को संघनिष्ठा एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। समागत अतिथियों का साहित्य व ओपरणा ओढ़ाकर सम्मान किया गया।

जीवन को सरस और मधुर बनाने वाले होते हैं पर्व

गांधीनगर।

मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि पर्व जीवन को सरस और मधुर बनाने वाले होते हैं। हर पर्व में एक प्रेरणा होती है, जिस प्रेरणा में हमारे जीवन को स्वर्णिम बनाने के रहस्य छिपे हुए होते हैं। भारतीय त्योहारों में एक विशिष्ट त्योहार है—दीपावली।

जैन धर्म में यह पर्व भगवान महावीर से जुड़ा है। इस दिन भगवान महावीर ने शिव-लक्ष्मी को प्राप्त किया था। हमें ज्ञान दीप के प्रकाश से आत्मा को प्रकाशित करना है। दीपावली के दिन लोग लक्ष्मी की पूजा करते हैं। लक्ष्मी के तीन रूप हैं—अलक्ष्मी, लक्ष्मी, महालक्ष्मी। मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि लक्ष्मी प्राप्त करने से पहले धर्म लक्ष्मी (श्री) को प्राप्त करना है। बाल संत जयदीप कुमार जी ने गीत का संगान किया।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष कमल दुगड़ ने विचार रखे। बहादुर सेठिया ने गीत का संगान किया। विशेष अनुष्ठान का क्रम मुनिश्री ने करवाया, जिसमें सैकड़ों व्यक्तियों ने लाभ लिया।

सेवा कार्य

भुज।

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल, भुज ने मुनि पुलकित कुमार जी के मुखारवृंद से मंगलपाठ सुनकर दीपावली के अवसर पर मिठाई और नमकीन के २२० फूड पैकेट बनाकर भुज के आसपास गरीबों को वितरित किया।

इस कार्य में तेयुप अध्यक्ष आशीष भाई बाबरिया, उपाध्यक्ष जिग्नेश दोशी, मंत्री महेश गांधी, सहमंत्री भाविक बाबरिया, किशोर मंडल के प्रभारी आदर्श संघवी, पार्थ शाह और किशोर मंडल के संयोजक विरल शेठ, सह-संयोजक हितांशु मेहता और जैनम मेहता, तेज मेहता और मन दोशी उपस्थित रहे।

सभी संघ के प्रति सेवा भावना रखें

हैदराबाद।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में टीपीएफ, हैदराबाद का शपथ ग्रहण समारोह तेरापंथ भवन, डीवी कॉलोनी में आयोजित किया गया।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि आज टीपीएफ की नई टीम का शपथ ग्रहण हुआ है। सभी संघ के प्रति सेवा भावना रखें एवं टीपीएफ के आयामों पर निष्ठापूर्वक संकल्प के साथ कार्य करें। नई टीम के लिए मंगलकामना प्रदान की।

साध्वी कल्पयशा जी ने टीपीएफ की नव नियोजित टीम को बधाई एवं भूतपूर्व टीम की तरह ही सफलतम बनने का आशीर्वाद प्रदान किया। समारोह की शुरुआत टीपीएफ सदस्यों द्वारा गीत के मंगलाचरण से हुई।

निवर्तमान अध्यक्ष मोहित बैद ने अपने कार्यकाल के कार्यक्रमों एवं उपलब्धियों के बारे में बताया। उन्होंने नव मनोनीत अध्यक्ष पंकज संचेती को शपथ दिलाई एवं सफल कार्यकाल के लिए शुभकामनाएँ दी। उसके बाद अध्यक्ष पंकज संचेती ने अपनी टीम के पदाधिकारियों व कार्यसमिति सदस्यों को शपथ दिलाई।

अध्यक्ष पंकज संचेती ने स्वागत भाषण में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि हमें टीपीएफ को और नई ऊँचाई पर लेकर जाना है। उन्होंने कुछ विशेष कार्य जैसे मिनी एमबीए, स्पिरिचुअल लाइब्रेरी को करने का लक्ष्य बताया।

शपथ ग्रहण समारोह में विशेष तौर पर गुवाहाटी से पधारे टीपीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोज नाहटा ने टीम को शुभकामनाएँ दी। उपाध्यक्ष सुनील पगारिया ने राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल द्वारा प्रेषित संदेश का वाचन किया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष बाबूलाल बैद, महिला मंडल अध्यक्षा अनिता गिड़िया, तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश भंडारी ने नवगठित टीम को शुभकामनाएँ दी। इस समारोह में टीपीएफ राष्ट्रीय टीम सदस्य नवीन सुराणा, आर्गेनाइजेशन डेवलपमेंट चेयरमैन ऋषभ दुगड़, नॉलेज बैंक चेयरमैन दीपक संचेती की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मंत्री अणुव्रत सुराणा ने किया। कार्यक्रम के अंत में कोषाध्यक्ष धीरज ललवाणी ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

७३वें अणुव्रत अधिवेशन का आगाज

छोटे-छोटे संकल्पों से मानव परिवर्तन हो

छापर, चाड़वास।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने कहा कि संयम में इतनी शक्ति होती है कि यह व्यक्ति को ऊँचाइयों पर आसीन कर सकती है। उन्होंने कहा कि किसी भी स्थिति में झूठ नहीं बोलना चाहिए, यहाँ तक कि मजाक में भी नहीं।

आचार्यश्री महाश्रमण जी अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तीन दिवसीय अधिवेशन के उद्घाटन सत्र में अपने उद्गार व्यक्त कर रहे थे। अणुविभा के पदाधिकारियों तथा देशभर की अणुव्रत समितियों के प्रतिनिधियों को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण जी ने कहा कि त्याग और तपस्या के बिना संसार के सारे सुख-भोगों की प्राप्ति किसी काम की नहीं है। छोटे-छोटे संकल्पों से भी व्यक्ति का मानस परिवर्तन हो सकता है। अणुव्रत एक मार्ग है, यह सभी समस्याओं का समाधान करता है। अणुव्रतों को अंगीकार करने का आह्वान करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि कोई भी व्यक्ति अणुव्रतों को अंगीकार करके अपने जीवन को सफल बना सकता है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में नैतिकता को बनाए रखने का प्रयास करे।

आचार्यश्री ने अणुविभा के पदाधिकारियों से कहा कि संस्था में प्रामाणिकता और पारदर्शिता होनी चाहिए। जैसे हम अपने आँगन में गंदगी देखना नहीं चाहते, वैसे ही हर हाल में आत्मा को शुद्ध बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। तभी गुरुदेव तुलसी का 'सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा' का संकल्प साकार रूप ले सकेगा। आचार्यश्री ने इस अवसर पर अणुव्रत गीत का संगान कर कार्यकर्ताओं में ऊर्जा का संचार किया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि अणुव्रत की आत्मा है—संयम, सदाचार और नैतिकता। जो व्यक्ति अपने जीवन में सुखी रहना चाहता है, उसके लिए जरूरी है कि वह नैतिक बने। उन्होंने एक कहानी के माध्यम से श्रम के साथ नैतिकता और ईमानदारी के महत्त्व को प्रतिपादित किया। उन्होंने कहा कि यदि समाज और देश को ऊँचा उठाना है तो अणुव्रत के नियमों को अपनाना होगा।

अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि मनन कुमार जी ने कहा कि अणुविभा संभवतः विश्व का इकलौता ऐसा संस्थान है जो व्यक्ति के उन्नयन के बारे में चिंतन करता है। उन्होंने सभी संभागियों से अणुव्रत के नियमों को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि गुरुदेव तुलसी ने १ मार्च, १९४९ को अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया था।

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष संचय जैन ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तन के समय अणुव्रत की जितनी जरूरत थी, मौजूदा परिस्थितियों में इसकी उससे भी कहीं अधिक जरूरत है। आज विश्व में नैतिक पतन और पर्यावरण के क्षरण का ग्राफ इतना बढ़ चुका है कि ऐसे कठिन समय में धर्म, जाति और संप्रदाय की परिधि से दूर रहने वाला अणुव्रत दर्शन ही मानवता को सच्ची राह दिखा सकता है। उन्होंने हर कदम पर अपेक्षित सहयोग के लिए अणुविभा टीम तथा अणुव्रत समितियों के प्रतिनिधियों का आभार व्यक्त किया।

अणुविभा के राष्ट्रीय महामंत्री भीखम सुराणा ने विगत वर्ष की गतिविधियों का ब्यौरा प्रस्तुत करने के साथ अणुव्रत के विभिन्न प्रकल्पों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली समितियों की भी घोषणा की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अधिवेशन के संयोजक प्रताप दुगड़ ने बताया कि दोपहर बाद चाड़वास के गुलाब भवन में आयोजित सत्र में संभागियों ने एक-दूसरे का परिचय प्राप्त किया। इसके बाद पश्चिमांचल और पूर्वांचल की अणुव्रत समितियों के अनुभव साझा सत्र का आयोजन किया गया। रात्रि आठ बजे से आयोजित अणुव्रत चौपाल में संभागियों ने गीतों और कविताओं की प्रस्तुति से समा बाँध दिया।

त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन

भीलवाड़ा।

दीपावली का पावन आध्यात्मिक, सांस्कृतिक पर्व और इसी दिन भगवान महावीर परम ज्योति में विलीन होकर निर्वाण को प्राप्त हुए। साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन नागौरी गार्डन में दीपावली एवं भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव पर त्रिदिवसीय कार्यक्रम आयोजित हुआ।

साध्वी परमयशा जी ने कहा कि भगवान महावीर जैसे दिव्य ज्योति पुंज की स्मृति में हम बाहरी दीपकों की रोशनी के साथ ही आंतरिक ज्योति का जागरण करके इस उत्सव की सार्थकता बनाए रखने का प्रयास करें।

साध्वी विनम्रयशा जी द्वारा सामायिक के तेले का अनुष्ठान भी आयोजित हुआ। धनतेरस के शुभ दिवस पर महिला मंडल भीलवाड़ा द्वारा एक दिवसीय अखंड आध्यात्मिक जाप अनुष्ठान, जिसमें प्रभु महावीर का स्मरण करते हुए जाप किया गया।

मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि नन्हे बालक कृतज्ञ रांका ने महाश्रमण अष्टकम एवं निर्मल सुतरिया, संजय भानावत द्वारा आध्यात्मिक गीतिकाओं का संगान किया गया।

सप्तगंठी अनुत्तर पंच परमेष्ठी आत्मरक्षा कवच अनुष्ठान

कोटा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, गुलाबबाड़ी में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में भगवान महावीर निर्वाण दिवस एवं सूर्यग्रहण के अवसर पर सप्तगंठी अनुत्तर पंच-परमेष्ठी आत्मरक्षा कवच अनुष्ठान का कार्यक्रम आयोजित हुआ। सैकड़ों भाई-बहनों ने इस दिव्य अनुष्ठान में भाग लेकर नई ऊर्जा की अनुभूति की।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि ज्योति के अवतार भगवान महावीर आज के दिन ज्योतिर्मय बन गए। भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव पर देवताओं ने दीप जलाकर दिवाली मनाई। हम भी अपने जीवन में समता, क्षमा, मैत्री, करुणा, प्रेम, सौहार्द, सामंजस्य, सरलता, सहजता, निस्पृहता, अहिंसा का दीप जलाकर महावीर बनने की दिशा में प्रशस्त करें।

साध्वीश्री जी ने कहा कि आज सूर्यग्रहण भी है। ग्रहण के समय ज्यादा-से-ज्यादा जप-अनुष्ठान एवं मंत्र-साधना करनी चाहिए। मंत्राधिराज महामंत्र पर आधारित यह अनुष्ठान अपने आपमें अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। मंत्र की अद्भुत, विलक्षण एवं अनुत्तर शक्ति का अनुभव करें एवं जीवन को आलोकित करें।

साध्वी कणिकाश्री जी, साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशा जी एवं साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने भगवान महावीर निर्वाणोत्सव पर स्वतन का संगान किया। सभा मंत्री धर्मचंद जैन ने कहा कि धर्मसंघ की प्रख्यात प्रबुद्ध एवं प्रवचनकार साध्वीश्री का पावास प्राप्त कर कोटा क्षेत्र निहाल हो गया। इस महाप्रभावक अनुष्ठान में साध्वीश्री जी ने सभी के भीतर अनुपम ऊर्जा का संचार किया है। संपूर्ण श्रावक समाज की ओर से हार्दिक कृतज्ञता। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने विचार रखे एवं साध्वी सुधाप्रभा जी ने आगामी कार्यक्रमों की सूचना संप्रेषित की।

अध्यात्म उजाले की प्रेरणा है भगवान महावीर निर्वाण दिवस

टी-दासरहल्ली।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक समारोह के अवसर पर कहा कि तीर्थंकर भगवान महावीर के उपदेश ना केवल जैन समाज के लिए बल्कि संपूर्ण मानव जाति के लिए आध्यात्मिक उजाले की प्रेरणा है। आत्मा के आलोक को, सच्चिदानंद स्वरूप को प्राप्त करने का संदेश है। साध्वी कंचनप्रभा जी ने स्वरचित गीतिका प्रस्तुत की।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि आज का मंगल दिन हर सभी के लिए शांति व आनंद की बहार लेकर आया है। जहाँ शांति है वहाँ सकारात्मक सोच है।

साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। साध्वीश्री की प्रेरणा से तेरह दिवसीय विशेष जप अनुष्ठान घर-घर में संपन्न हुआ। इस अवसर पर कैलाश सहलोत ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त की। संस्थापक अध्यक्ष लादुलाल बाबेल, अध्यक्ष नवरतन गांधी, अभातेयुप से राकेश दक ने अपने विचार रखे। तेरापंथ सभा ट्रस्ट, तेरापंथ महिला मंडल, तेयुप परिवार एवं दासरहल्ली व निकटतम क्षेत्रों से सकल जैन समाज के श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। संचालन सभा मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया।

शीलवती सोना नाटका का मंचन

कांदिवली।

तेरापंथ भवन के ऑडिटोरियम में शीलवती सोना के नाटक का मंचन किया गया। भारतीय इतिहास के गौरवमय पृष्ठों की सजीव प्रस्तुति तेमम एवं कन्या मंडल, कांदिवली ने बखूबी की। साध्वी निर्वाणश्री जी की प्रेरणा एवं साध्वी योगक्षेमप्रभा जी के मार्गदर्शन में शील एवं सदाचार की इस प्रेरक गाथा ने सबका मन मोहा।

साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि शील नारी जीवन का शृंगार है, उसकी सुरक्षा के लिए उसने हर चुनौती को झेला है। शील एक त्रैकालिक सत्य है। उसकी महिमा अतीत में थी, वर्तमान में है और भविष्य में रहेगी। साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि जैन धर्म में १६ महासतियों का जीवन चरित्र सबके लिए प्रेरणास्पद रहा है।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई, जिसे तेमम की बहनों ने प्रस्तुति दी। एसटीएमएफ के अध्यक्ष विनोद बोहरा, तेरापंथी सभा, कांदिवली के अध्यक्ष पारस दुगड़, तेमम संयोजिका नीतू नाहटा ने सामयिक प्रस्तुति दी।

आभार ज्ञापन तेयुप के अध्यक्ष नवनीत कच्छारा ने किया। संचालन भारती सेठिया तथा नाटक का संयोजन नूतन लोढ़ा ने किया। अलका पटावरी, इशिका पिंचा, नीतू नाहटा सहित सभी ने अपने-अपने पात्रों की जीवंत प्रस्तुति से सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। सभी प्रतिभागियों को एसटीएमएफ द्वारा पुरस्कृत किया गया।

✦ *धर्म का ही एक महत्त्वपूर्ण अंग है सच्चाई। नैतिकता सच्चाई से जुड़ा हुआ तत्त्व है।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन

आमेट।

अभातेयुप के निर्देशानुसार तेयुप द्वारा बारह व्रत साप्ताहिक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित हुई। इस कार्यशाला का शुभारंभ तेयुप अध्यक्ष पवन कच्दारा द्वारा सुमधुर गीतिका के संगान से हुआ। स्वागत उद्बोधन तेयुप अध्यख पवन कच्छारा द्वारा किया गया।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने बारह व्रतों के महत्त्व को समझाते हुए कहा कि किए हुए कर्मों की निर्जरा एवं नवीन कर्मों को रोकने का सशक्त साधन है–व्रत दीक्षा।

यह श्रावक जीवन का सबसे बड़ा खजाना है। व्रत दीक्षा में व्यक्ति अपने विवेक से छोटे-छोटे नियमों का पालन कर अपनी इच्छाओं को संयमित करता है एवं अपनी जीवनशैली को संतुलित बनाए रखता है।

कार्यशाला में ७५ श्रावक-श्राविकाओं ने ११ या १२ व्रतों को स्वीकार, १ -२ वर्ष या आजीवन के लिए व्रत दीक्षा स्वीकार की।

इस अवसर पर चातुर्मास संपन्नता पर श्रावक समाज ने उपहार के रूप में व्रत दीक्षा भेंट की। इस व्रत कार्यशाला में तेरापंथ सभा अध्यक्ष देवेंद्र मेहता, मंत्री ज्ञानेश्वर मेहता, महिला मंडल अध्यक्ष मीना गेलड़ा, मंत्री संगीता पामेचा, तेयुप मंत्री विपुल पितलिया आदि की उपस्थिति रही। व्रत दीक्षा में उपस्थित संपूर्ण श्रावक समाज का आभार तेयुप अध्यक्ष पवन कच्छारा ने किया।

डिस्ट्रिब्यूशन ऑफ फूड का आयोजन

विजयनगर।

अभातेयुप एवं अखिल भारतीय तेरापंथ किशोर मंडल के निर्देशन में 'लक्ष्य है ऊँचा हमारा' के अंतर्गत डिस्ट्रिब्यूशन ऑफ फूड का आयोजन तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा मुनि रश्मि कुमार जी द्वारा मंगलपाठ के श्रवण से शुभारंभ किया गया।

सभी किशोर गीता आश्रम पहुँचे और वहाँ अनाथ बच्चों को मिठाई-बिस्कुट आदि जरूरत का सामान वितरण किया। गीता आश्रम के संचालक ने सभी किशोरों को धन्यवाद दिया। किशोर मंडल के संयोजक नमन चावत, हर्ष मांडोत, उज्ज्वल बांठिया, रिद्धम चावत, अदित हिरण, मुदित हिरण, लोहित मेहता सहभागी रहे।

तेयुप, विजयनगर अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा ने किशोर मंडल के साथियों को सेवा के कोई भी कार्य में सदैव तैयार रहने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर तेयुप कार्यसमिति से दिनेश मेहता, मुकेश डागा, रौनक चोरड़िया उपस्थित रहे।

शांति निवास वृद्धाश्रम में जलपान

बेहाला।

महापर्व दीपावली के उपलक्ष्य में तेयुप, बेहाला द्वारा शांति निवास वृद्धाश्रम में सदस्यों को जलपान कराया एवं उन्हें दीपावली पर एकांतवास के अंधेरे दूर कर परिवार का आनंद प्रदान किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ वृद्धा आश्रम की संयोजिका रीना सेन ने मंगलाचरण करते हुए तेयुप के सभी सदस्यों के लिए मंगलकामना हेतु प्रार्थना की। इस सेवा कार्य में सभी सदस्यों का पूर्ण योगदान रहा।

यह कार्यक्रम हनुमानमल सेठिया के सौजन्य से संपन्न हुआ। उन्होंने अपनी धर्मपत्नी राजश्री सेठिया के जन्मदिन के उपलक्ष्य में इस कार्यक्रम को संचालित करने में अपना योगदान दिया।

परिषद के उपाध्यक्ष सुनील भंसाली, मंत्री राहुल मनोत, संगठन मंत्री अभिषेक बैंगाणी आदि अनेक जन उपस्थित रहे।

दीपावली पूजन फोटो प्रतियोगिता का आयोजन

औरंबाबाद।

तेयुप के तत्त्वावधान में इस वर्ष दीपावली पूजन जैन संस्कार विधि से हो इसके लिए एक आध्यात्मिक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के आयोजन का प्राथमिक उद्देश्य यह था कि हमारे समाज में जैन संस्कार विधि से दीपावली पूजन के बारे में लोगों में जागरूकता हो और सभी ज्यादा से ज्यादा संख्या में जैन संस्कार विधि से दीपावली पूजन करें।

दीपावली पूजन फोटो प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी को प्रतिभागियों को साधुवाद। इस प्रतियोगिता का लोगों में अच्छा हर्षोल्लास रहा।

प्रतियोगिता में प्रथम कमलेश सेठिया, द्वितीय गौरव सेठिया, एवं तृतीय मयूर आच्छा एवं लविश धोका रहे।

दो दिवसीय व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

सूरत।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा चलाई गई दो दिवसीय व्यक्तित्व विकास कार्यशाला Who Am I का समापन समारोह अभातेयुप के उपाध्यक्ष जयेश मेहता की अध्यक्षता में हुआ।

मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। श्रावकनिष्ठा पत्र का वाचन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता द्वारा किया गया। तेयुप, सूरत के अध्यक्ष अमित सेठिया द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। पर्सनेलिटी डेवलपमेंट के राष्ट्रीय सहप्रभारी अमित गन्ना ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। प्रत्येक ग्रुप में से १ प्रतिभागी ने अपने अनुभवों को साझा किया तथा कार्यशाला में क्या बदलाव ला सकते हैं, उसका सुझाव दिया।

ट्रेनर नूतन लोढ़ा एवं दिनेश बुरड़ ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

दीपांशु सेखानी ने पधारे हुए सभी मेहमानों का एवं सहभागियों का आभार व्यक्त किया।

फूड डिस्ट्रीब्यूशन

दक्षिण मुंबई।

तेरापंथ किशोर मंडल ने तेयुप के मार्गदर्शन में 'फूड डिस्ट्रीब्यूशन' का आयोजन किया। उन्होंने मरीन लाइन स्टेशन और चरनी रोड, स्टेशन के पास करीब २०० जरूरतमंद लोगों में खाना वितरण किया तथा बच्चों को जूस भी दिया। तेरापंथ किशोर मंडल ने सभी को दीपावली की शुभकामनाएँ दीं।

इस अभियान में दिशांत ढेलरिया, तन्मय झवेरी, वीर कच्छारा, अर्थ कच्छारा, संयम धाकड़, ध्रुव धींग, हर्ष सिंघवी, मोक्ष वागरेचा, ऋषि धाकड़, विश्व डागलिया, हीत मेहता, मुदित बोलिया, दर्शन डागलिया ने भाग लिया।

लक्ष्य है ऊँचा हमारा के अंतर्गत कार्यक्रम

साउथ हावड़ा

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा 'लक्ष्य है ऊँचा हमारा' अभियान के तहत दीपावली पर्व पर क्षेत्र के नबो जीवन आश्रम में सायं का खाना और मिठाई वितरण किया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ किशोरों द्वारा सामूहिक मंत्रोच्चार के साथ किया। तेयुप के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने सभी का स्वागत किया।

कार्यक्रम में संगठन मंत्री और पर्यवेक्षक रोहित बैद, किशोर मंडल संयोजक संजोग पारख, आशीष बैद, सह-संयोजक साहिल नाहर सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। संचालन एवं आभार ज्ञापन संगठन मंत्री रोहित बैद द्वारा किया गया।

राजाजीनगर

अभातेयुप द्वारा निर्देशित आयाम 'लक्ष्य है ऊँचा हमारा' दीपावली के अवसर पर तेयुप एवं तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा श्रीरामपुरम स्थित Sweet Angles Children Homes में सेवा कार्य संपादित किया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई। Sweet Angles Children Homes में ४० बच्चों को ठंड हेतु कंबल एवं बिस्किट प्रदान किए गए।

ट्रस्ट के प्रभारी बाबूजी ने इस कार्यक्रम की सराहना करते हुए परिषद परिवार और किशोर मंडल के प्रति हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया।

इस अवसर पर किशोर मंडल से संयोजक कमल चोरड़िया, यश देसरला, नमन सिसोदिया, तेयुप अध्यक्ष अरविंद गन्ना सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

रायपुर

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा वितरण कार्यक्रम के तहत एचआईवी पॉजिटिव बच्चों को दीपावली के अवसर पर फ्रूट्स, मिठाई, नमकीन, चॉकलेट इत्यादि का वितरण किया गया।

जिसमें किशोर मंडल के सदस्यों ने सहभागिता दर्ज करवाई। इस अवसर पर तेयुप, रायपुर अध्यक्ष मनीष दुगड़, मंत्री महेश गोलछा, तेरापंथ किशोर मंडल प्रभारी अंकित मालू, तेरापंथ किशोर मंडल संयोजक गौरव नाहटा सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

विजयनगर

तेयुप द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत Bless Society Trust Laggere में प्रायोजक परिवार रोशनलाल, दिनेश, राकेश, अरविंद पोखरणा, बैंगलोर द्वारा स्व० प्रेमदेवी पोखरणा की द्वितीय पुण्यतिथि पर Blind बच्चों को नाश्ता एवं यूनीफॉर्म की व्यवस्था की गई।

परिषद के साथियों द्वारा वहाँ उपस्थित बच्चों को नमस्कार महामंत्र का जाप भी कराया गया।

तेयुप, विजयनगर के अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा, उपाध्यक्ष विकास बांठिया, मंत्री राकेश पोखरणा सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

बैंगलुरु

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप एवं तेरापंथ किशोर मंडल के नेतृत्व में खाद्य सामग्री का वितरण मनुकूला चैरिटेबल एवं शिक्षण संस्थान अनाथ आश्रम गोविंदराज नगर में किया गया। इस अवसर पर तेयुप के अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा, कोषाध्यक्ष पवन चोपड़ा, पूर्व मंत्री प्रवीण बोहरा, किशोर मंडल संयोजक आदित्य मांडोत, सह-संयोजक पीयूष नाहर के साथ तेयुप और किशोर मंडल के अनेक सदस्य उपस्थित रहे।

औरंगाबाद

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, तेमम एवं तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा दीपावली के अवसर पर रेलवे स्टेशन रोड, तेरापंथ भवन, पानदरीबा रोड एवं आसपास के इलाकों में मिठाई वितरण का कार्यक्रम किया गया।

✦ *समता की साधना जैन-अजैन सबके लिए उपयोगी होती है। समता धर्म है और विषमता पाप है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

28 नवंबर - 4 दिसंबर, 2022

अच्छा जीवन जीने के लिए अपनाएँ अहिंसापूर्ण जीवनशैली : आचार्यश्री महाश्रमण

खामियाद, १६ नवंबर, २०२२

तेरापंथ शासन सम्राट आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः १० कि०मी० का विहार कर खामियाद गाँव स्थित शहीद नंदकिशोर सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय पधारे। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि अहिंसा एक ऐसा तत्त्व है, जो बहुत व्यापक है। दुनिया में इतने धर्म हैं। इन धर्मों में कौन सा धर्म होगा जो अहिंसा को महत्त्व नहीं देता। अच्छे इंसान एवं एक सामान्य आदमी के लिए अहिंसापूर्ण जीवनशैली से जीवन जीना भी अच्छा होता है।

'अहिंसा परमो धम्मो।' अहिंसा को परम धर्म कहा गया है। विद्यार्थी विद्यालय में ज्ञान प्राप्त करते हैं, उसके साथ अहिंसा, सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति, विनम्रता ऐसे संस्कारों का भी सृजन किया जाना चाहिए ताकि वे ज्ञान संपन्न के साथ संस्कारसंपन्नभीबनसके।

वनस्पति, पानी, हवा, अग्नि और मिट्टी भी सजीव हो सकती है। जैन धर्म में इनमें जीवत्व को स्वीकारा है कि इनकी हिंसा करने से बचने का प्रयास करो। प्राणियों को अपने समान समझो। मैं दूसरों को कष्ट क्यों दूँ। जो व्यवहार तुम्हारे लिए प्रतिकूल है, वह व्यवहार तुम भी दूसरों के साथ मत करो।

बच्चे अच्छे-सच्चे हैं, तो आगे देश भी अच्छा रह सकता है। बच्चों में अच्छे संस्कार आते रहें, यह एक प्रसंग से समझाया। जीवन में ईमानदारी रहे। परीक्षा में नकल से नहीं अकल से सफलता प्राप्त करें। ज्ञान पाना मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। इंसान पहले इंसान, फिर हिंदू या मुसलमान। अच्छे संस्कार सबमें पुष्ट हों।

आचार्यश्री के आह्वान पर समुपस्थित विद्यार्थियों, ग्रामीण जनता व शिक्षकों ने आचार्यश्री के श्रीमुख से सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्पों को स्वीकार किया। विद्यालय के प्रधानाध्यापक मोहनराम ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

दिन के प्रवास के पश्चात आचार्यप्रवर धवल सेना के साथ ८ किलोमीटर का विहार कर बांठड़ी गाँव पधारे। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सच्चाई और अच्छाई के मार्ग पर चलने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

बड़ी खाटू, १६ नवंबर, २०२२

मनुष्य को मनुष्यता का अनुभव कराने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः छोटी खाटू से विहार कर बड़ी खाटू पधारे। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि प्रश्न होता है कि सत्य क्या है? यथार्थ क्या है? हम दुनिया में जी रहे हैं, दुनिया को देख भी रहे हैं। जितनी दुनिया हम देख पा रहे हैं वह उतनी ही है या और भी है।

इस सृष्टि में कितनी चीजें हैं। सूर्य, चंद्रमा कितने हैं। कितने प्राणी दुनिया में हैं। ये वनस्पति, पानी भी सजीव है। वायु, अग्नि व मिट्टी सजीव हो सकती है। देव जगत कितना विशाल है। नरक में नारकीय जीव कितने हैं। वीतराग हैं, उन्होंने जो प्रवेदित कर दिया है, वो सत्य है, निशंक है।

आदमी सच्चाई और अच्छाई के मार्ग पर चलने का प्रयास करे। ये दोनों जीवन में आ जाएँ। सत्य और प्रिय बोलें, शब्द के साथ हमारे भाव अच्छे हों। अध्ययन के द्वारा हम सच्चाई को प्राप्त कर सकते हैं। साफ-साफ कहने वाले हो तो साफ-साफ सुनने का भी प्रयास करें। सिर्फ दूसरों के दोष न देखें, अच्छाई भी देखें। जीवन को भीतर की आँखों से देखने का प्रयास करें। झूठा आरोप न लगाएँ।

आत्मा का अतिन्द्रिय ज्ञान जाग जाए तो फिर हम बिन किताब पढ़े सच्चाइयों से रूबरू हो सकते हैं। इंद्रियों के आधार पर भी सच्चाई जान सकते हैं। बच्चे सच्चे भी हों और अच्छे भी हों तो जीवन अच्छा जिया जा सकता है।

आज बड़ी खाटू आए हैं। पहले भी आना हुआ है। यहाँ की जनता में धार्मिक भावना रहे। अहिंसा यात्रा के तीन सूत्रों को समझाकर स्वीकार करवाया। सभी इन संकल्पों को पालने का प्रयास करें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि पूज्यप्रवर ऐसे विरले व्यक्तित्व हैं, जो मनीषी भी हैं और हितैषी भी हैं। जो विद्वान होते हैं, उनकी चेतना जागृत

रहती है। पूज्यप्रवर लेखक भी हैं और वक्ता भी। मैं आपको साहित्यकार के रूप में देख रही हूँ। प्रमुखाश्री जी ने विद्यार्थियों को अच्छी जीवनशैली के गुर समझाए।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में बरमेचा-कोठारी परिवार की बहनों ने गीत से, चंदनबाला, रामकुमार टेलर, अभिलाषा, राजश्री कोठारी, इंद्र कोठारी, रणजीत गुर्जर (स्कूल से) ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ कर्मवाद आस्तिक विचारधारा का महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। दो प्रकार की विचारधाराएँ हैं—आस्तिक व नास्तिक।

– आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 नवंबर - 4 दिसंबर, 2022

✦ *आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

असफलता से सबक सीखकर पुरुषार्थ करने से मिलती है बड़ी सफलता : आचार्यश्री महाश्रमण

मांझी, २० नवंबर, २०२२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः अपनी धवल सेना के साथ १३ किलोमीटर का प्रलंब विहार कर मांझी स्थित दधिनति महाविद्यालय पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए शासन शेखर ने फरमाया कि समता को धर्म कहा गया है। आदमी के जीवन में अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियाँ आ सकती हैं। अनुकूल में ज्यादा खुशियाँ नहीं मनाना और प्रतिकूल परिस्थिति में दुखी नहीं बनना, आर्त्तध्यान में नहीं जाना, ज्यादा शोकाकुल नहीं होना।

समता की साधना अध्यात्म की आराधना है। दुनिया में जीत-हार चलती रहती है। जीवन में अनेक अवसर आ सकते हैं। गुरुदेव तुलसी को मान-सम्मान प्राप्त हुआ तो प्रतिकूलताएँ आईं, विरोध भी हुआ। पर दोनों स्थिति में सम रहे। लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरण, निंदा-प्रशंसा में समता-शांति रखें। धीरज का फल मीठा हो सकता है।

जीवन में कोई कार्य करते हैं और सफलता न मिले तो एक बार पुनः प्रयास करना चाहिए। कारण को खोजकर कारण मिटाया जा सकता है। जीवन एक संघर्ष है, धर्म और अध्यात्म के मार्ग पर आगे बढ़ें। चलने वाले को कभी चोट भी लग सकती है। चलना बंद न करें, सावधानी रखें।

जिंदगी में आदमी ठोकरें खाते-खाते बहुत आगे बढ़ सकता है। चलते-चलते जीवन में धर्म का, अध्यात्म का विकास करते रहो। असफलता से डरना नहीं चाहिए, उसके कारणों को खोजें। बाधक तत्त्वों को दूर करते जाएँगे तो अच्छी मंजिल प्राप्त कर सकते हैं। हर असफलता से सबक सीखेंगे तो बड़ी सफलता मिल सकती है। अच्छा पुरुषार्थ करें।

जो महापुरुष हुए हैं, उन्होंने अपने जीवन में अध्यात्म की आराधना की है। हमारा जैन शासन भगवान महावीर से जुड़ा हुआ है। तीर्थंकर महावीर समता के एक उदाहरण हैं। ऐसे महापुरुष के जीवन से हम समता की साधना की प्रेरणा ले सकते हैं। हमारे जीवन में समता भाव पुष्ट रहे, यह काम्य है। अल्प समय के विराम के पश्चात युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने लगभग ढाई बजे पुनः गतिमान हुए। आचार्यश्री के आगमन से चांदारुण गाँववासी हर्ष-विभोर बने हुए थे। ग्रामीणों ने आचार्यश्री का अपने गाँव में भावभीना अभिनंदन किया। आचार्यश्री के स्वागत में बाल-वृद्ध सभी सोत्साह उपस्थित थे। आचार्यश्री लगभग आठ किलोमीटर संपन्न कर रात्रिकालीन प्रवास हेतु चांदारुण में स्थित राजकीय मालिका माध्यमिक विद्यालय में पधारे। जहाँ देर रात तक आचार्यश्री के दर्शनार्थ ग्रामीणों के उपस्थित होने का ताँता लगा हुआ था।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**